होरी

प्रेमचन्द



नाट्य रूपान्तर : विष्णु प्रभाकर

होरी

(प्रेमचंद के अमर उपन्यास 'गोदान' का नाट्य-रूपान्तर)

नाट्य-रूपान्तरकार

विष्णु प्रभाकर

राजपाल

मूल्य : पच्चीस रुपये (Rs. 25.00)

संस्करण : 1999
ISBN : 81-7028-295-0
HORI (Dramatic Version of Premchand's GODAN)
by Vishnu Prabhakar

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

भूमिका

प्रस्तुत नाटक **होरी** में प्रेमचन्द के प्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' का नाट्य-रूपान्तर है। उनके पुत्र श्री अमृतराय के कहने पर यह रूपान्तर मैंने सन् 1954 में किया था। यह संयोग की बात है कि 1955 में दिल्ली आर्ट थियेटर ने इसका मंचन किया। थियेटर की प्रसिद्ध अभिनेत्री श्रीमती शीला भाटिया, श्री फ्रेंक ठाकुर दास, श्री वेद व्यास आदि इसके कर्त्ता-धर्त्ता थे। प्रसिद्ध आलोचक नेमीचन्द जैन व उनकी पत्नी भी इस संस्था से जुड़े हुए थे। उन सब ने मिलकर इस नाटक का सूक्ष्मता से परीक्षण किया, अनेक परिवर्तन भी सुझाए। श्री फ्रेंक ठाकुर दास को इसका निर्देशन सौंपा गया। उस समय होने वाली रिहर्सलों में मैं भी उपस्थित रहता था।

होरी का अभिनय श्री वेद व्यास ने किया, धनिया का श्रीमती शीला भाटिया ने किया था। उपन्यास का विस्तार बहुत व्यापक है, इसलिए मंचन में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। लेकिन उन लोगों का परिश्रम अन्ततः सार्थक साबित हुआ। समाचारपत्रों में बहुत चर्चा हुई, कुछ लोगों ने बहुत प्रशंसा की, कुछ लोगों ने उसके कुछ दोष भी बताए। तब से लेकर भारत के अनेक भागों में इसका मंचन हुआ। इसका एक रूपान्तर पहले भी हो चुका था, बाद में भी हुआ। कलकत्ता की एक प्रसिद्ध संस्था से जुड़ी हुई श्रीमती प्रतिभा अग्रवाल ने भी बहुत वर्षों बाद इसका एक अच्छा रूपान्तर प्रस्तुत किया। स्वयं ही वे इसकी निर्देशिका भी रहीं। लेकिन जहाँ तक मेरे रूपान्तर का सम्बन्ध है, उसके मंचन में जो कठिनाइयाँ आती रहीं, उनको ध्यान में रखकर बार-बार इसमें कुछ संशोधन किए गए। दिल्ली

में 'नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा' नाम की संस्था स्वायत्त संस्था के रूप में स्थापित हुई। मेरा उस संस्था से सम्बन्ध तब जुड़ा जब नेमीचन्द जैन उसके डायरेक्टर थे। उनके बाद आए प्रसिद्ध नाट्यकला-मर्मज्ञ और निर्देशक श्री अलकाजी। उनके समय में दिल्ली में नाट्यकला का बहुत विकास हुआ। विश्वप्रसिद्ध नाटकों का मंचन किया गया। हिन्दी में धर्मवीर भारती के प्रसिद्ध नाटक 'अन्धा युग' का मंचन उन्होंने पुराने क़िले में मंच बनाकर किंया था। अपने इसी दृष्टिकोण के कारण उन्होंने **होरी** के लिए भी रवीन्द्र भवन के प्रांगण में खुले नाट्य-मंच का निर्माण किया। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ज़ाकिर हुसैन ने उसका उद्‌घाटन किया। उसकी भी बहुत चर्चा हुई। उद्‌घाटन के अवसर पर मैं दिल्ली में नहीं था। बाद में लौटकर मैंने उसे देखा तो मुझे वैसे तो बहुत अच्छा लगा लेकिन एक बात खटकी। मंच के एक स्थान पर नाटक का कोई दृश्य दिखाया जा रहा है, तो गाँव के दूसरे स्थान पर होनेवाली चहल-पहल कभी बड़ी खटकती थी। उसके बाद **होरी** को प्रसिद्ध सांस्कृतिक संस्था 'इण्डियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन' ने अपना लिया और वर्षों तक उसका मंचन करती रही। अब भी करती है। प्रसिद्ध अभिनेत्री रोहिणी हटंगड़ी ने इसमें धनिया का अभिनय किया और श्री हंगल ने होरी का।

एक बार संयोग से टी. वी. पर श्री हंगल का इन्टरव्यू हो रहा था। मैंने उसे देखा। उनसे एक प्रश्न किया गया कि किस नाटक में, कौन-सा रोल करने पर आपको सबसे अधिक संतोष प्राप्त हुआ तो उनका स्पष्ट उत्तर था कि होरी का रोल करते हुए मुझे सबसे अच्छा लगा, मैं जैसे उस चरित्र के साथ एकाकार हो जाता था।

बहुत पुरस्कार मिले इसके अभिनेताओं को, सबसे पहली प्रस्तुति में जो 1955 में हुई थी। इस नाटक ने चार पुरस्कार जीते। श्रीमती शीला भाटिया को धनिया का रोल करने पर सर्वप्रथम पुरस्कार मिला था। इन्हीं के साथ दो और व्यक्ति पुरस्कृत हुए थे। फ्रेंक ठाकुर दास को सर्वश्रेष्ठ निर्देशन का पुरस्कार मिला था और एक बच्ची को होरी की छोटी बेटी रूपा का अभिनय करने पर।

रेडियो और दूरदर्शन पर भी इसको कई बार प्रस्तुत किया गया। रेडियो पर चार भागों में यह ब्रॉडकास्ट हुआ। कई भाषाओं में अनुवाद भी हुए। गुजराती भाषा के अतिरिक्त रूसी भाषा में भी इसका अनुवाद हुआ।

निःसन्देह इस नाटक के साथ प्रेमचन्द का नाम जुड़ा हुआ था। कथा उन्हीं की थी पर रूपान्तर तो मैंने किया था इसलिए मुझे भी इसका उचित श्रेय मिला। आर्थिक दृष्टि से तो मुझे कोई लाभ नहीं हुआ केवल नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा ने जो इसकी चार प्रस्तुतियाँ की थीं उनके लिए मुझे पारिश्रमिक मिला। हाँ, रेडियो व टेलीविजन से तो मिलता ही है। लेकिन मेरे लिए पैसे का प्रलोभन कभी नहीं रहा। मुझे जो कुछ मिला वो पैसे से कहीं ज्यादा था। प्रायः रिहर्सल के समय लेखक को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता लेकिन होरी की रिहर्सल में मैं प्रायः बराबर ही जाता रहा। बहुत कुछ सीखा मैंने अपने पात्रों को अपने सामने अपने शब्द बोलते हुए सुनकर। मैंने स्वयं अनुभव किया कि वहाँ ऐसा न होकर ऐसा होता तो ज़्यादा अच्छा होता। श्री फ्रेंक ठाकुर दास ने कहीं-कहीं परिवर्तन किए भी, समयाभाव के कारण कई अंश छोड़ भी दिए। नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा की ओर से इसके मंचन में श्री मनोहरलाल ने भी कुछ सुधार किए, नेमीचन्द ने भी किए। अन्ततः इप्टा ने जब इसका बार-बार मंचन किया तो तब जो इसका अन्तिम रूप बना उसी रूप को अब मैंने यहाँ प्रस्तुत किया है। बहुत परिवर्तन करना पड़ा, बहुत कुछ छोड़ना पड़ा। एक तरह से यह नया ही रूपान्तर है। कई कारणों से यह इस रूप में अभी तक प्रकाशित नहीं हो सका था। उसका एक कारण यह भी था कि यह पाठ्य-पुस्तक के रूप में भी अनेक वर्षों तक कई स्थानों पर लगा रहा।

अब प्रेमचन्द जी का साहित्य सार्वजनिक हो गया है इसलिए मैंने, इप्टा ने इसे जिस रूप में प्रस्तुत किया है उसी में इसे फिर से संशोधित किया। तीस से ज़्यादा पृष्ठ कम भी करने पड़े। अब भी यह कहना कि यह अन्तिम रूप है, बड़ा मुश्किल है। विश्वप्रसिद्ध नाटकों में निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं। हर निर्देशक अपनी दृष्टि से उसकी प्रस्तुति करता

है मगर मूल कथा के साथ कोई स्वतन्त्रता नहीं लेता। **होरी** में यह स्वीकार करना पड़ेगा। हमने उपन्यास के उस अंश को छोड़ दिया है जिसका सम्बन्ध शहरी जीवन से था। प्रेमचन्द जी अगर स्वयं इस नाटक को लिखते तो निश्चय ही वह इस अंश को छोड़ देते। समय की दृष्टि से नहीं बल्कि प्रभाव की दृष्टि से भी। **होरी** का शहरी जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं है।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए मुझे विश्वास है, अब यह रूपान्तर मंच पर और भी सघन प्रभाव छोड़ेगा।

—विष्णु प्रभाकर

पात्र-परिचय

होरी : चालीस-वर्षीय किसान
धनिया : उसकी पत्नी
भोला : ग्वाला
गोबर : होरी का लड़का
रूपा : होरी की छोटी लड़की
सोना : होरी की बड़ी लड़की
दातादीन : गाँव का पण्डित
हीरा : होरी का भाई
पटेश्वरी : गाँव का पटवारी
दारोग़ा : पुलिस अफ़सर
ठाकुर झिंगुरी सिंह : ज़मींदार
झुनिया : भोला की लड़की
सोभा : होरी का छोटा भाई
बिहारी : एक किसान

(इसके अतिरिक्त मज़दूर युवक व बच्चे आदि-आदि।)

अंक एक

[रंगमंच पर पर्दा पड़ा हुआ है, वह उठे उससे पूर्व पृष्ठभूमि में उद्घोषक का स्वर गूँजता है।]

उद्घोषक : *यह नाटक जो आपके सामने प्रस्तुत किया जा रहा है, हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचन्द के उपन्यास 'गोदान' के नायक 'होरी' की कहानी है। मूल रूप से यह नाटक नहीं है बल्कि उपन्यास का नाट्य-रूपान्तर है।*

'होरी' एक किसान है, उसके बहाने उपन्यासकार ने अभावग्रस्त भारतीय किसान की जीवनगाथा का मार्मिक चित्रण किया है। उसकी आशा-निराशा, सरलता-कुटिलता, प्रेम-घृणा, गुण-दोष सबको स्वर दिया है। यह कहानी वैसे तो बनारस के आस-पास के गाँव की कहानी है लेकिन किसान बनारस का हो या भारत के किसी अन्य प्रदेश का, उसकी मूलभूत भावनाएँ व समस्याएँ एक ही हैं। इसलिए 'होरी' अपनी सम्पूर्ण दुर्बलताओं और विशेषताओं के साथ भारत के किसान का प्रतिनिधि है। वह भारतीय किसान है।

[यह स्वर मिटते-न-मिटते पर्दा उठने लगता है। पूरा उठ जाने के बाद पूर्वी उत्तर-प्रदेश के गाँव का दृश्य

दिखाई देता है। टूटे-फूटे घर, नालियाँ, दाएँ-बाएँ पगडण्डियाँ। ऐसे ही एक कच्चे घर का दृश्य मंच के बीच में दिखाई देता है। उसी घर के चबूतरे पर होरी की पत्नी धनिया चक्की पीसती नज़र आती है। उम्र अधिक नहीं है, लेकिन देखने में बुढ़िया लगती है। बाल पक गए हैं, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गई हैं। रंग भी साँवला पड़ गया है, आँखों से भी कम दिखाई देता है। चबूतरे के नीचे होरी ज़ोर-ज़ोर से कुल्ला कर रहा है। देखने में वह भी बूढ़ा लगता है। गहरा साँवला रंग, पिचके गाल, सूखा बदन।]

धनिया : ज़रा धीरे-धीरे, दाँत बाहर निकल आएंगे।

होरी : तो क्या तू समझती है कि मैं बूढ़ा हो गया ! अभी तो चालीस भी नहीं हुए। मर्द साठे पर पाठे होते हैं।

धनिया : जाकर सीसे में मुँह देखो। तुम जैसे मर्द साठे पर पाठे नहीं होते। दूध-घी अंजन लगाने तक को तो मिलता नहीं, पाठे होंगे ! तुम्हारी दशा देख-देखकर तो मैं और सूखी जाती हूँ कि भगवान, यह बुढ़ापा कैसे कटेगा ? किसके द्वार भीख माँगेंगे ?

होरी : *(सहसा शून्य में ताक कर)* नहीं धनिया, सूखने की ज़रूरत नहीं। साठे तक पहुँचने की नौबत ही न आने पावेगी। इसके पहले ही चल देंगे।

धनिया : *(तिरस्कार से)* अच्छा रहने दो, मत असुभ मुँह से निकालो ! तुमसे तो कोई अच्छी बात भी कहे तो लगते हो कोसने।

[अन्दर चली जाती है।]

होरी : *(मंच के दूसरी ओर जाकर)* कैसी अच्छी ऊख हुई है। भगवान कहीं गौंसे बरखा कर दे और डाण्डी भी सुभीते से रहे तो एक गाय जरूर लूँगा। और पछाँई लूंगा। देशी तो न दूध दे, न उसके बछवे ही किसी काम के। कुछ नहीं तो चार-पाँच सेर दूध होगा। गोबर दूध के लिए तरस-तरस कर रह जाता है। साल भर दूध पी ले तो देखने लायक हो जाए। फिर गऊ से ही तो द्वार की शोभा है *(गायों के रंभाने व घण्टी बजने का स्वर सुनाई देता है। होरी चौंककर उधर देखता है)* गाय ...अहा भोला आ रहा है। वह...वह गाय कैसी अच्छी है। अगर भोला यह गाय मुझे दे दे तो क्या कहने !

[भोला का मंच पर प्रवेश। पचास वर्ष का खंखड़ है। होरी उसके पास जाता है।]

होरी : राम-राम भोला भाई। कहो, क्या रंग-ढंग है ? सुना है, अबकी मेले से नई गाय लाए हो।

भोला : *(रूखाई से)* हाँ, दो बछिये और दो गायें लाया हूँ। पहले वाली सूख गई थीं। बँधी पर दूध न पहुँचे तो गुजर कैसे हो ?

होरी : दुधारू तो मालूम होती है। कितने में ली ?

भोला : *(ज्ञान से)* अब की बाजार कुछ तेज था महतो, इसके अस्सी रुपए देने पड़े। आँख निकल गई...

होरी : *(चकित होकर)* बड़ा भारी कलेजा है तुम लोगों का भाई,

लेकिन फिर लाए भी तो वह माल की...

भोला : *(एकदम)* रायसाहब इसके सौ रुपए देते थे लेकिन हमने न दी। भगवान ने चाहा तो सौ रुपए इसी ब्यान में पीट लूँगा।

होरी : इसमें क्या सन्देह है भाई। मालिक क्या खाके लेंगे। नज़राने में मिल जाए तो भले ही ले लें। यह तुम्हीं लोगों का गुर्दा है कि अंजुली-भर रुपए तकदीर के भरोसे गिन देते हो, धन्य है तुम्हारा जीवन कि गऊओं की इतनी सेवा करते हो। हमें तो गाय का गोबर तक मयस्सर नहीं।

भोला : कहते तो ठीक हो, महतो।

होरी : घरवाली बार-बार कहती है, भोला भैया से क्यों नहीं कहते। तुम्हारे सुभाव से बड़ी परसन रहती है। कहती है, ऐसा मर्द ही नहीं देखा कि जब बात करेंगे आँख नीची करके।

भोला : भला आदमी वही है जो दूसरों की बहू-बेटी को अपनी बहू-बेटी समझे। जो दुष्ट किसी मेहरिया की ओर ताके उसे गोली मार देनी चाहिए।

होरी : यह तुमने लाख रुपए की बात कह दी, भाई।

भोला : जिस तरह मर्द के मर जाने से औरत अनाथ हो जाती है उसी तरह औरत के मर जाने से मर्द के भी हाथ-पाँव कट जाते हैं। मेरा तो घर उजड़ गया महतो, कोई एक लोटा पानी भी देने वाला नहीं।

होरी : हाँ दादा, पुरानी मसल झूठी थोड़ी है। बिन घरनी घर

भूत का डेरा। कहीं सगाई नहीं ठीक कर लेते ?

भोला : ताक में हूँ महतो, पर कोई जल्दी फँसता नहीं। सौ-पचास...

होरी : *(एकदम)* अब मैं फिराक में रहूँगा। भगवान ने चाहा तो जल्दी घर बस जाएगा।

भोला : जैसी तुम्हारी इच्छा। हाँ, इस गाय पर मन ललचाया हो तो ले लो।

होरी : ना, यह गाय मेरे मान की नहीं है, दादा। मैं तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता।

भोला : तुम तो ऐसी बातें करते हो जैसे हम तुम दो हों। तुम गाय ले जाओ, दाम जो चाहे देना। अस्सी रुपए में ली थी, चलो तुम अस्सी रुपए ही दे देना।

होरी : लेकिन मेरे पास नगद नहीं है दादा, समझ लो।

भोला : तो तुमसे नगद माँगता कौन है ? आओ, ले जाओ *(बाहर की ओर बढ़ता है)* तुम भी याद करोगे। ब्याते ही छः सेर दूध ले लेना। मालिक नब्बे रुपये देते थे पर उनके यहाँ गऊओं की क्या कदर,तुम्हारे घर आराम से रहेगी। उसकी सेवा करोगे, प्यार करोगे, चुमकारोगे; गऊ हमें आसीरबाद देगी।

होरी : जरूर देगी। दादा, जरूर देगी।

भोला : *(ठिठककर)* तुमसे क्या कहूँ भइया। घर में चंगुल-भर भी भूसा नहीं रहा। इतने जानवरों को क्या खिलाऊँ, यही चिन्ता मारे डालती है।

होरी : तुमने हमसे पहले क्यों न कहा ? हमने एक गाड़ी भूसा

बेच दिया।

भोला : *(माथा ठोंककर)* इसलिए नहीं कहा भैया कि सबसे अपना दुख क्यों रोऊँ। करता कोई नहीं, हँसते सब हैं।...हो सके, तो दस-बीस रुपया भूसे के लिए दे दो।

होरी : *(मुड़कर मंच के बीच आ जाता है)* रुपए तो दादा मेरे पास नहीं हैं। हाँ, थोड़ा-सा भूसा बचा है, वह तुम्हें दे दूँगा। चलकर उठवा लो, भूसे के लिए तुम गाय बेचोगे और मैं लूँगा। मेरे हाथ न कट जाएँगे !

भोला : *(आर्द्र कण्ठ से)* तुम्हारे बैल भूखे न मरेंगे ?

होरी : नहीं दादा, अबकी भूसा अच्छा हो गया था।

भोला : मैंने तुमसे नाहक भूसे की चर्चा की।

होरी : तुम न कहते और पीछे से मुझे मालूम होता, तो मुझे बड़ा रंज होता कि तुमने मुझे इतना गैर समझ लिया...

भोला : *(बाहर को जाते हुए)* मुदा यह गाय तो लेते जाओ।

होरी : *(दूसरी तरफ़ बढ़ता है)* अभी नहीं दादा, फिर ले लूँगा।

भोला : तो भूसे का दाम दूध में कटवा लेना।

होरी : *(ठिठककर दुखी स्वर में)* दाम-कौड़ी की इसमें कौन-सी बात है, दादा, मैं एक-दो जून तुम्हारे घर खा लूँ तो तुम मुझसे दाम माँगोगे ?

भोला : सो तो ठीक है लेकिन तुम्हारे बैल भूखों मरेंगे कि नहीं ?

होरी : भगवान कोई-न-कोई सबील निकालेंगे ही। असाढ़ सिर पर है, कड़बी बो लूँगा।

भोला : मगर यह गाय तुम्हारी हो गई। जिस दिन इच्छा हो आकर ले जाना। *(जाता है, ठिठकता है, ज़ोर से कहता है)* मगर उस बात को भूल न जाना।

[होरी उसे देखता है। हाथ से आश्वासन देता है। भोला जाता है। होरी ठिठकता है। फिर मंच के बीच में आकर ललचाई निगाहों से उसके जाने की दिशा में देखता है। फिर बोल उठता है।]

होरी : कैसे सिर हिलाती, मस्तानी, मन्द गति से झूमती चली जाती है। जैसे बाँदियों के बीच में कोई रानी हो। कैसा सुभ होगा वह दिन जब यह कामधेनु मेरे द्वार पर बँधेगी।

[उसके बोलते-बोलते मंच पर अन्धकार उतरने लगता है। दो क्षण बाद प्रकाश की रेखाएँ उभरती हैं। पूर्ण प्रकाश होने पर होरी घर के चबूतरे पर बैठा चिलम पी रहा है। दो क्षण बाद गोबर अन्दर से कुदाल लिए आता है। उसे देखकर होरी बोल उठता है।]

होरी : अभी से चल दिए। जरा ठहर जाओ बेटा, हम भी चलते हैं। तब तक थोड़ा-सा भूसा निकालकर रख दो। मैंने भोला को देने को कहा है। बेचारा आजकल बहुत तंग है।

गोबर : *(अवज्ञा से)* हमारे पास बेचने को भूसा नहीं है।

होरी : बेचता नहीं हूँ भाई, यों ही दे रहा हूँ। वह संकट में है, उसकी मदद तो करनी ही पड़ेगी।

गोबर : हमें तो उन्होंने कभी एक गाय भी नहीं दी।

होरी : दे तो रहा था, हमीं ने नहीं ली।

[धनिया झूठे बर्तन लिए बाहर आती है। बर्तन माँजते हुए।]

धनिया : *(मटक कर)* गाय नहीं, वह दे रहा था ! आँख में अंजन लगाने को कभी चुल्लू भर दूध तो भेजा ही नहीं, गाय दे देगा !

होरी : नहीं जवानी कसम, अपनी पछाँई गाय दे रहे थे। हाथ तंग है, भूसा चारा नहीं रख सके। अब एक गाय बेचकर भूसा लेना चाहते हैं।

गोबर : तो ले लें, कौन रोकता है।

होरी : रोकता कौन ? मैंने ही सोचा कि संकट में पड़े आदमी की गाय क्या लूँ। थोड़ा-सा भूसा दिए देता हूँ, कुछ रुपए हाथ आ जाएँगे तो गाय ले लूँगा...

गोबर : *(एकदम)* तुम्हारा यही धर्मात्मापन तो हमारी दुर्गत करा रहा है। साफ बात है। अस्सी रुपए की गाय है, हमसे बीस रुपए का भूसा ले ले और गाय हमें दे दे। साठ रुपए रह जाएँगे, वह हम धीरे-धीरे दे देंगे।

होरी : *(मुस्कराकर)* मैंने ऐसी चाल सोची है कि गाय सेंत-मेंत में हाथ आ जाए। कहीं भोला की सगाई ठीक करनी है, बस।

गोबर : *(तिरस्कार से)* तो तुम अब उसकी सगाई ठीक करते फिरोगे।

धनिया : *(तीखी निगाह)* अब यही एक उद्यम तो रह गया है। नहीं देना है हमें किसी को भूसा। यहाँ भोली-भोला किसी का करज नहीं खाया।

होरी : अगर मेरे जतन से किसी का घर बस जाए तो इसमें कौन-सी बुराई है। गोबर जरा बेटा चिलम में आग तो रख ला। *(गोबर चिलम लेकर जाता है।)*

धनिया : जो उनका घर बसाएगा, वह अस्सी रुपए की गाय लेकर चुप न होगा—एक थैली गिनवाएगा।

होरी : *(प्यार से)* वह मैं जानता हूँ। लेकिन उसकी भलमनसी को भी तो देखो। मुझसे जब मिलता है तेरा बखान ही करता है—ऐसी लच्छमी है, ऐसी सलीकेदार है।

धनिया : *(ऊपरी क्रोध से)* मैं उनके बखान की भूखी नहीं हूँ। वह अपना बखान धरे रहें।...अच्छा, क्या कहते थे ?

होरी : *(मुस्कराकर)* कहता था जिस दिन तुम्हारी घरवाली का मुँह सवेरे देख लेता हूँ उस दिन कुछ-न-कुछ जरूर हाथ लगता है। मैंने कहा तुम्हारे लगता होगा। यहाँ तो रोज देखते हैं, कभी पैसे से भेंट नहीं होती।

धनिया : तुम्हारे भाग ही खोटे हैं तो मैं क्या करूँ।

[गोबर का प्रवेश]

गोबर : लो भोला दादा आ पहुँचे हैं। मन-दो-मन भूसा है। वह उन्हें दे दो, फिर उनकी सगाई ढूँढ़ने निकलो।

धनिया : *(उठती हुई)* उनके लिए खाट-वाट तो डाल नहीं दी ऊपर से लगे भुनभुनाने। कुछ तो भलमनसी सीखो। कलसे में पानी भर दो। हाथ-मुँह धोएँ। कुछ रस-पानी पिला दो।

होरी : रस-वस का काम नहीं, कौन कोई पाहुने हैं।

धनिया : *(बिगड़कर)* पाहुने और कैसे होते हैं। रोज-रोज तो

तुम्हारे द्वार पर आते नहीं। *(पुकारती अन्दर जाती है)* रूपिया, रूपिया।

[होरी मुस्कराता है। गोबर खाट लाकर डाल जाता है। तभी खाँचा लिए भोला का प्रवेश।]

होरी : आओ, आओ, भोला दादा। यहाँ बैठो खाट पर *(पुकारकर)* ओ रूपिया, ओ सोना, रस घोला कि नहीं ?

भोला : अरे-अरे महतो, रस-वस क्या होगा !

होरी : अब मुझे कुछ पता नहीं, गोबर की माँ जाने, घरनी वह है !

[रूपा का गुड़ और सोना का रस लेकर प्रवेश। रूपा–नंगे बदन, लंगोटी लगाए, झबरे बाल इधर-उधर बिखरे हुए। सोना–गठा हुआ बदन, लम्बा, रूखा पर प्रसन्न मुख, आँखों में तृप्ति, ठुड्डी नीचे को खिंची हुई, न बालों में तेल, न आँखों में काजल, न देह पर गहने, जैसे गृहस्थी के भार ने यौवन को दबाकर बौना कर दिया हो।]

भोला : *(हँसकर)* हाँ महतो, अच्छी घरनी घर में आ जाए तो समझ लो लक्ष्मी आ गई। वह जानती है, छोटे-बड़े का आदर-सत्कार कैसे करना चाहिए।

[रस पीते हैं, फिर चिलम। धनिया दरवाज़े के अन्दर खड़ी सुन रही है। मुस्कराती है।]

दशहरा आ रहा है, मालिकों के द्वार पर तो बड़ी धूमधाम होगी ?

होरी : हाँ, तम्बू-सामियाना गड़ गया है। अबकी लीला में मैं भी काम करूँगा। रायसाहब ने कहा है–तुम्हें राजा जनक का माली बनना पड़ेगा।

भोला : मालिक तुमसे बहुत खुश हैं।

होरी : उनकी दया है।

भोला : *(चिलम पीकर)* लेकिन रायसाहब को दशहरा भेंट के लिए रुपयों का कुछ जुगाड़ कर लिया है ? माली बन जाने से तो गला न छूटेगा !

होरी : उसी की चिन्ता तो मारे डालती है, दादा। अनाज तो सब-का-सब खलिहान में ही तुल गया। यह भूसा तो रातों-रात ढोकर छिपा दिया था, नहीं तो तिनका भी न बचता। तीन-तीन महाजन हैं, किसी का ब्याज भी पूरा न चुका। भइया, हमारा जनम इसलिए हुआ है कि अपना रकत बहाएं और बड़ों का घर भरें।... आदमी तो हम भी हैं।

भोला : कौन कहता है कि हम तुम आदमी हैं। आदमी वे हैं जिनके पास धन है, अख्तियार है, इलम है। हम लोग तो बैल हैं और जुतने को पैदा हुए हैं। उस पर एके का नाम नहीं। परेम तो संसार से उठ गया।

होरी : हाँ दादा, परेम तो संसार से उठ गया। अच्छा बैठो, मैं खाँचा भर लाऊँ। *(उठता है)*

भोला : ना महतो, बैठूँगा नहीं। जब तक तुम खाँचा भरो तब तक मैं दातादीन पण्डित से बात कर लूँ। *(उठता है)* क्या बताऊँ,यहाँ लड़कों से नहीं पटती। दोनों नालायक हैं और मैं किसी की कुचाल देखकर मुँह बन्द नहीं कर सकता। सारा काम मुझे करना पड़ता है। सानी-पानी मैं करूँ, गाय-भैंस मैं दुहूँ, दूध लेकर बाजार

मैं जाऊँ। यह गृहस्थी जी का जन्जाल है, सोने की हंसिया, जो उगलते बने न निगलते। *(आगे बढ़ता हुआ मुड़ता है)* तुम तो जानते हो; तुमने भाइयों को बेटों की तरह पाला पर मौके पर अलग हो गए। तुम्हें बड़ा रंज हुआ होगा।

होरी : कुछ न पूछो, दादा। यही जी चाहता था कि कहीं जाकर डूब मरूँ। गोबर की माँ की जो दुर्गत हुई वह मैं ही जानता हूँ, पर बहुत अच्छा हुआ कि अलग हो गए। मेरे सिर से बला टली।

भोला : यही हाल घर-घर है भइया। अच्छा, मैं अभी आया।

[जाता है, होरी खाँचा उठाता है, धनिया बाहर आती है]

होरी : *(खाँचा उठाकर)* जाने कहाँ से इतना बड़ा खाँचा ले आया। मन भर से कम में न भरेगा। दो खाँचे भी दिए तो दो मन निकल जाएँगे।

धनिया : तो क्या हुआ ? या तो किसी को नेवता न दो और दो तो भर पेट खिलाओ। तुम्हारे पास फूल-पत्र लेने थोड़े आए हैं कि चंगेरी लेकर चलते। देते ही हो तो तीन खाँचे दो।

होरी : तीन खाँचे तो मेरे दिए न दिए जाएँगे।

धनिया : तब क्या एक खाँचा देकर टालोगे ! गोबर से कह दो कि अपना खाँचा भरकर उसके साथ चला जाए।

होरी : यह तो अच्छी दिल्लगी है कि अपना माल भी दो और उसे घर तक पहुँचा भी दो। लाद दे, लदा दे, लादनेवाला और साथ कर दे। और तीन खाँचे उन्हें दूँ तो अपने

बैल क्या खाएँगे ?

धनिया : यह तो नेवता देने के पहले ही सोच लेना था।

होरी : मुरौवत, मुरौवत की तरह की जाती है, अपना घर उठाकर नहीं दे दिया जाता।

धनिया : अभी जमींदार का प्यादा आ जाए तो भूसा अपने सिर पर लादकर पहुँचाओगे तुम, तुम्हारा लड़का-लड़की सब।

होरी : ज़मींदार की बात और है।

धनिया : हाँ, वह डण्डे के ज़ोर से काम लेता है न !

होरी : उसके खेत नहीं जोतते ?

धनिया : खेत जोतते हैं तो लगान नहीं देते ?

होरी : अच्छा भाई, जान न खा। हम दोनों चले जाएँगे। कहाँ-से-कहाँ मैंने इन्हें भूसा देने को कह दिया। या तो चलेगी नहीं और चलेगी तो दौड़ने लगेगी।

[दोनों अन्दर जाते हैं, तभी प्रकाश गदराने लगता है, कुछ और अंधकार बढ़ता है। साँझ होने वाली है। होरी उतावला-सा घर के बाहर चिलम पीता हुआ उचककर रास्ते की तरफ़ देखता है।]

होरी : गोबर अभी तक न आया। वहाँ जाकर सो रहा क्या ? भोला की वह मदमाती छोकरी नहीं है, झुनिया ? उसके साथ हँसी-दिल्लगी कर रहा होगा ? *(उचककर)* नहीं गाय दी तो लौट क्यों नहीं आया ? क्या वहाँ ढई देगा ? पर वह तो दूसरी गाय के चक्कर में फँसा होगा न !

[**तभी रूपा, सोना का भागते हुए आना।**]

रूपा, सोना : *(एक-साथ हाँफती हुई),* भैया गाय ला रहे हैं। आगे-आगे गाय है पीछे-पीछे भैया हैं।

होरी : *(एकदम)* गाय आ गई ?

रूपा : *(आगे बढ़कर)* हाँ, पहले मैंने देखा था तभी दौड़ी, सोना ने तो पीछे देखा।

सोना : तूने भैया को कहाँ पहचाना ? तू तो कहती थी कोई गाय भागी आ रही है। मैंने कहा कि भैया हैं।

रूपा : ऊँ हूँ, पहले मैंने देखा था।

सोना : नहीं, पहले मैंने *(रूपा चिढ़ाकर बाहर भागती है, सोना पीछे-पीछे जाती है)*

होरी : *(पुकारता हुआ)* गोबर की माँ...गोबर की माँ, गाय आ गई।

[**धनिया तेज़ी-से, प्रसन्न होती हुई आती है।**]

धनिया : क्या गाय आ गई ?

होरी : *(प्रसन्न होकर)* हाँ, गाय आ गयी। चलो, जल्दी से नाँद गाड़ दें।

धनिया : नहीं,पहले थाली में थोड़ा-सा आटा और गुड़ घोलकर रख दें। बेचारी धूप में चली होगी। प्यासी होगी। तुम जाकर नाँद गाड़ो, मैं घोलती हूँ।

होरी : कहीं एक घण्टी पड़ी थी। उसे ढूँढ़ लो। उसे गले में बाँधेंगे।

धनिया : *(जाती-जाती रुककर पुकारती है)* सोना, सहुआइन की दुकान से थोड़ा-सा काला डोरा ले आ। गाय को नजर

बहुत लगती है।

होरी : आज मेरे मन की बड़ी भारी लालसा पूरी हो गयी।

धनिया : *(आकाश की ओर देखकर)* गाय के आने का आनन्द तो जब है कि उसका पौरा भी अच्छा हो। भगवान के मन की बात है।

[तेज़ी-से अन्दर जाती है। होरी विह्वल होकर बाहर आता है। धनिया अन्दर से, उसी तेज़ी-से काली किनारी लिए आती है।]

होरी : *(गद्गद्)* आज भगवान ने यह दिन दिखाया, मेरा घर गऊ के चरणों से पवित्र हो गया। न जाने किसके पुन्न से...

धनिया : अब ऐसे कब तक करते रहोगे। आँगन में नाँद गाड़ दो।

होरी : आँगन में जगह कहाँ है ?

धनिया : बहुत जगह है।

होरी : मैं तो बाहर ही गाड़ता हूँ।

धनिया : पागल मत बनो। गाँव का हाल जानकर भी अनजान बनते हो।

होरी : अरे बित्ते भर के आँगन में गाय कहाँ बँधेगी, भाई।

धनिया : जो बात नहीं जानते, उसमें टाँग मत अड़ाया करो। संसार-भर की विद्या तुम्हीं नहीं पढ़े हो।

होरी : तो तू ही पढ़ी है ?

धनिया : हाँ पढ़ी हूँ; तभी तो कहती हूँ कि गाय आँगन में बँधेगी।

होरी : *(एकदम)* धनिया...

गोबर : *(आकर)* अभी तक नाँद नहीं गड़ी। सारा गाँव तमाशा देख रहा है।

होरी : तेरी माँ माने तब न। कहती है कि गाय आँगन में बँधेगी।

गोबर : कैसे बँधेगी। आँगन में बाँधने को नहीं लाए। नाँद बाहर गाड़ो, दादा।

धनिया : कैसे गाड़ोगे। नाँद आँगन में गड़ेगी। चलो, जल्दी करो। हमें नहीं गाँव को दिखाना। गाँव की हालत नहीं जानते क्या। कल को... *(एक क्षण तीनों एक-दूसरे को देखते हैं)*

होरी : *(एकदम)* अच्छा बाबा, तू जीती, मैं हारा। गाय आँगन में ही बँधेगी। चल बेटा गोबर, उधर से गाय को आँगन में ले चल।

[**शोर बराबर उठता रहता है। गोबर लौटता है। धनिया, होरी घर में जाते हैं। दातादीन का प्रवेश। सत्तर वर्ष के बूढ़े पण्डित हैं।**]

दातादीन : कहाँ हो होरी, होरी...

होरी : *(आकर)* पा लागन पण्डित जी। आइए, आइए...

दातादीन : तनिक हम भी तुम्हारी गाय देख लें। सुना है, बड़ी सुन्दर है।

होरी : हाँ, हाँ, आइए। आपकी ही गाय है। आइए।

[**दोनों अन्दर जाते हैं। रूपा, सोना के साथ बच्चे आते-जाते हैं। तभी दातादीन, धनिया और होरी बाहर आते हैं।**]

दातादीन : कोई दोष नहीं बेटा ! बाल, भौरी, सब ठीक है। भगवान चाहेंगे तो तुम्हारे भाग खुल जाएँगे। ऐसे अच्छे लच्छन

हैं कि वाह। बस रातिब न कम होने पाए। एक-एक बाछा सौ-सौ का होगा।

होरी : *(गद्‌गद्)* सब आपका आसीरबाद है, दादा !

दातादीन : *(पीक थूकते हुए)* मेरा आसीरबाद नहीं है, बेटा भगवान की दया है। यह सब प्रभु की दया है। रुपये नगद दिए ?

होरी : भोला ऐसा भलमानस नहीं है,महाराज। नगद गिनाए, पूरे चौकस।

दातादीन : *(एक बार होरी को देखते हैं,फिर प्रसन्न होकर)* कोई हरज नहीं बेटा, कोई हरज नहीं। भगवान सब का कल्याण करेंगे। पाँच सेर दूध है इसमें, बच्चे को छोड़कर।

धनिया : अरे नहीं महाराज, इतना दूध कहाँ ? बुढ़िया तो हो गई है। फिर यहाँ रातिब कहाँ धरा है।

दातादीन : *(धनिया को मर्मभरी दृष्टि से देखकर)* ठीक है लेकिन बाहर न बाँधना, इतना कहे देते हैं।

धनिया : *(होरी को देखकर)* सुन लिया, *(दातादीन से)* नहीं महाराज बाहर क्या बाँधेंगे, भगवान दे तो इसी आँगन में तीन गाय और बँध सकती हैं।

[अनुभवी पण्डित जी हँसते हुए जाते हैं। धनिया, होरी अन्दर जाते हैं। संध्या गहरी होती है। मंच पर प्रकाश गहराता है। होरी, धनिया आते हैं।]

होरी : सारा गाँव गाय देखने आया पर सोभा न आया, न हीरा।

धनिया : नहीं आए तो यहाँ कौन उन्हें बुलाने जाता है !

होरी : तू तो बात समझती नहीं, लड़ने को तैयार रहती है। भगवान ने जब यह दिन दिखाया है तो हमें सिर झुकाकर चलना चाहिए। आदमी को अपने सगों के मुँह से अपनी भलाई-बुराई सुनने की जितनी लालसा होती है, बाहरवालों के मुँह से नहीं। दोनों को लाकर दिखा देना चाहिए, नहीं तो कहेंगे...

धनिया : *(तिनककर एकदम)* मैंने तुमसे सौ बार-हजार बार कह दिया मेरे मुँह पर भाइयों का बखान न किया करो...

होरी : धनिया, तू तो...

धनिया : *(पूर्वतः)* मैं तो क्या ? मैं पूछती हूँ, सारे गाँव ने सुना, क्या उन्होंने न सुना होगा ? सारा गाँव देखने आया उन्हीं के पाँव में मेंहदी लगी हुई थी, मगर आएँ कैसे ? जलन हो रही होगी कि अपने घर गाय आ गई, छाती फटी जाती होगी। *(जाती हुई)* मैं तो मिट्टी का तेल लाने जा रही हूँ। किसी को बुलाने मत भेज देना।

[जाती है, होरी सिर हिलाता है, रूपा आती है।]

होरी : रूपा, रूपा, जरा जाकर देख कि हीरा काका आ गए हैं कि नहीं। सोभा काका को भी देखती आना। कहना दादा ने तुम्हें बुलाया है।

रूपा : *(ठुनककर)* छोटी काकी मुझे डाँटती है।

होरी : काकी के पास क्या करने जाएगी...

रूपा : सोभा काका भी मुझे चिढ़ाते हैं, कहते हैं...मैं न कहूँगी।

होरी : क्या कहते हैं बता ?

रूपा : चिढ़ाते हैं।

होरी : क्या कहकर चिढ़ाते हैं ?

रूपा : कहते हैं कि तेरे लिए मूस पकड़ कर रखा है। ले जा भूनकर खा ले।

होरी : *(हँसकर)* तू कहती, नहीं पहले तुम खा लो, तो मैं खाऊँगी।

रूपा : अम्माँ मने करती है, कहती है उन लोगों के घर न जाया कर।

होरी : तू अम्माँ की बेटी है कि दादा की ?

रूपा : *(गले में हाथ डालकर)* अम्माँ की *(हँसती है)।*

होरी : तो फिर मेरी गोद से उतर जा। आज मैं तुझे अपनी थाली में न खिलाऊँगा।

रूपा : *(मचलकर)* अच्छा, तुम्हारी बेटी।

होरी : तो फिर मेरा कहना मानेगी कि अम्माँ का ?

रूपा : तुम्हारा।

होरी : तो जाकर हीरा और सोभा को खींच ला।

रूपा : और जो अम्माँ बिगड़ें ?

होरी : अम्माँ से कहने कौन जाएगा।

[रूपा जाने को बढ़ती है कि तेल लिए धनिया आ जाती है।]

धनिया : कहाँ चली ? हूँ, काका को बुलाने जाती होगी। चल अन्दर, किसी को बुलाने नहीं जाना है। *(होरी से)* मैंने तुमसे हजार बार कह दिया, मेरी लड़कियों को किसी के घर न भेजा करो। किसी ने कुछ कर-करा दिया,

तो मैं तुम्हें लेकर चाटूँगी। *(अन्दर जाती है)*

होरी : *(अनजान-सा)* किस बात पर बिगड़ती है, भाई। यह तो अच्छा नहीं लगता कि अन्धे कूकुर की तरह हवा को भूँका करें। *(बाहर जाता हुआ)* भाई मेरा बुरा चेतें, मैं उनका बुरा क्यों चेतूँ। अपनी-अपनी करनी अपने-अपने साथ। मैं आप ही जाता हूँ।

[**मंच पर अँधेरा और गहरा होता है। समय की सूचना देने को धीरे-धीरे गहराता है। होरी बाहर से आता है। बहुत व्यग्र है। बड़बड़ाता है।**]

होरी : नहीं, नहीं, गाय रहेगी, रहेगी...पर हीरा ने यह क्या कहा। नहीं, नहीं, मेरी नियत साफ है। भगवान के सामने मैं निरदोस हूँ...पर...पर...हीरा जलता है, और भी जलते होंगे। तो क्यों न गाय को लौटा दूँ। इतना बड़ा कलंक सिर पर लेकर मैं गाय को घर में न रख सकूँगा...मैं उसे लौटा दूँगा। अभी लौटा दूँगा।

[**धनिया का प्रवेश।**]

धनिया : किसे लौटा दोगे ?

होरी : *(ठिठककर)* गाय को...

धनिया : क्यों, क्या हुआ ? लौटा क्यों दोगे ? लौटाने के लिए लाए थे ?

होरी : हाँ, लौटा देने में ही कुसल है।

धनिया : क्यों, बात क्या है ? क्या भोला रुपए माँगता है ?

होरी : नहीं, भोला यहाँ कब आया ?

धनिया : तो फिर क्या बात है ?

होरी : क्या करेगी पूछकर ?

धनिया : *(तेज़ होकर)* हूँ, समझी, तो तुम्हें भाइयों का डर है, लेकिन मैं किसी से नहीं डरती। अगर हमारी बढ़ती देखकर किसी की छाती फटती है तो फट जाए।

होरी : *(विनम्र स्वर)* धीरे-धीरे बोल, महारानी। मैं अपने कानों से क्या सुन आया हूँ, तू क्या जाने। चर्चा हो रही है कि मैंने अलग होते समय रुपए दबा लिए थे। भाइयों को धोखा दिया था...

धनिया : हीरा कहता होगा ?

होरी : सारा गाँव कह रहा है, हीरा को क्यों बदनाम करूं।

धनिया : सारा गाँव नहीं कह रहा। अकेला हीरा कह रहा है। मैं अभी जाकर पूछती हूँ न कि तुम्हारे बाप कितने रुपए छोड़कर मरे थे। *(बाहर जाती है)* डाढ़ीजारों के पीछे हम बरबाद हो गए और अब हम बेईमान हैं ! मैं कहती हूँ, रख लिये रुपए, दबा लिये। हीरा, सोभा, और संसार को जो करना हो कर ले। क्यों न रुपए रख लें ? दो-दो साण्डों का ब्याह नहीं किया !

[रुकती नहीं, चीख़ती हुई मार्ग पर बढ़ जाती है। धनिया के पीछे होरी भी आता है।]

होरी : बिगड़ती है तो चण्डी बन जाती है। सुन तो, अरे सुन।

[धनिया नहीं सुनती। चीख़ती है। आदमी आने लगते हैं।]

धनिया : कहाँ है हीरा ? बाहर तो आ। तू हमें देखकर क्यों जलता है ? हमें देखकर क्यों तेरी छाती फटती है ? पाल-पोसकर जवान कर दिया। *(हीरा का प्रवेश)* हमने न पाला होता तो आज कहीं भीख माँगते होते...

हीरा : हमने पाला न होता...बड़ी आई पालनेवाली ! तेरे घर में कुत्तों की तरह एक टुकड़ा खाते थे और दिन भर काम करते थे। दिन-दिन भर सूखा गोबर बीना करते थे। उस पर भी बिना दस गाली दिए रोटी न देती थी। तेरी जैसी राच्छसिन के हाथ में पड़कर जिन्दगी तलख हो गई।

धनिया : *(तेज़ होकर)* जबान सँभाल नहीं तो जीभ खींच लूँगी। राच्छसिन होगी तेरी औरत। तू है किस फेर में मूंड़ीकाटे, टुकड़खोर, नमकहराम...

दातादीन : इतना कटु वचन क्यों कहती है, धनिया। नारी का धर्म है कि गम खाए। वह जो उजड्ड है क्यों उसके मुँह लगती है ?

पटेश्वरी : बात का जवाब बात है, गाली नहीं। तूने लड़कपन में उसे पाला-पोसा, लेकिन यह क्यों भूल जाती है कि उसकी जायदाद तेरे हाथ में थी।

धनिया : अच्छा, तुम रहने दो, लाला। मैं सबको पहचानती हूँ। मैं गाली दे रही हूँ, वह फूल बरसा रहा है, क्यों ?

हीरा : चली जा मेरे द्वार से, नहीं तो जूतों से बात करूँगा। झोंटा पकड़कर उखाड़ लूँगा। गाली देती है डायन। बेटे का घमण्ड हो गया है।

[भीड़ में अचरज के भाव दिखाई देते हैं।]

होरी : *(एकदम आगे बढ़ता है)* अच्छा बस, अब चुप हो जाओ हीरा। अब नहीं सुना जाता। मैं इस औरत को क्या कहूँ। जब मेरी पीठ में धूल लगती है, तब इसी के

कारण।

दातादीन : बड़ा निर्लज्ज है हीरा।

पटेश्वरी : अजी, गुण्डा है।

धनिया : सुन लो कान खोल के, भाइयों के लिए मरते रहते हो। ये भाई हैं, ऐसे भाई का मुँह न देखें। यह मुझे जूतों से मारेगा...

होरी : फिर क्यों बक-बक करने लगी तू। घर क्यों नहीं जाती।

धनिया : *(धम्म-से ज़मीन पर बैठती है और आर्त स्वर में पुकारती है)* अब तो इससे जूते खा के जाऊँगी। जरा इसकी मर्दुमी देख लूँ। कहाँ है गोबर *(होरी उसे खींचता है)* अब किस दिन काम आएगा तू ? देख रहा है बेटा, तेरी माँ को जूते मारे जा रहे हैं। *(एकदम छुड़ाकर हीरा को धक्का देती है। वह गिर पड़ता है)* कहाँ जाता है, जूते मार, मार जूते, देखूँ तेरी मर्दुमी !

[**होरी तेज़ी-से उसे पकड़कर खींचता है और घर में ले जाता है।**]

होरी : तू चलेगी नहीं...चल...मैं कहता हूँ, यूं नहीं मानेगी..

[**तभी मंच पर अंधकार उतरने लगता है। गहरा होने के बाद प्रकाश चमकता है। धीरे-धीरे मंच पर पूरी तरह फैल जाता है। होरी खाट पर बड़ा चिन्तित बैठा है। सोना, रूपा उसके पास बैठी हैं। धनिया पास में पीढ़े पर बैठी व्यग्र होकर होरी को देख रही है।**]

धनिया : क्या कहा झिंगुरी सिंह ने ?

होरी : बताता हूँ *(निश्वास लेकर)* रायसाहब को यह क्या हुआ।

और कभी तो इतनी कड़ाई नहीं होती थी। अबकी यह कैसा हुआ कि जब तक बाकी न चुक जाएगी किसी को खेत में हल न ले जाने दिया जाएगा।

धनिया : यह क्या कह रहे हो ? मैं पूछती हूँ, झिंगुरी सिंह ने रुपया दिया या नहीं ?

होरी : नहीं।

धनिया : नहीं ? क्या कहा ?

होरी : कहा कि रुपए उधार लेने में अपनी बर्बादी के सिवा और कुछ नहीं।

धनिया : फिर ?

होरी : फिर गाय बेचने को कहते थे।

धनिया : *(चौंककर)* क्या...क्या कहते थे ?

होरी : कहते थे, यह नयी गाय जो लाए हो, उसे हमारे हाथ बेच दो। सूद-इसटाम के झगड़े से बच जाओगे।

धनिया : नहीं, नहीं, यह नहीं होगा। हम गाय बेचने को नहीं लाए। मैं इन सबको जानती हूँ। जलते हैं। गाय देखकर छाती फटती है। नहीं बेचेंगे हम गाय। कर ले जो जिसके जी में आए।

रूपा : नहीं, नहीं, दादा ! गाय नहीं बेचना, मेरी गाय...

सोना : दादा, तुमने गाय बेची तो देख लेना...

होरी : *(पुचकारकर)* गाय बेचना क्या मुझे अच्छा लगता है। पर हमारे इतने पुन्न कहाँ बेटी कि गऊ माता हमारे द्वार पर रहे। फिर यह संकट तो काटना ही है। राय साहब को रुपए देने हैं, नहीं तो हल न चलेगा।

रूपा : पर नहीं देते हम अपनी गाय। रुपए जहाँ से चाहे लाओ।

सोना : इससे तो अच्छा है कि मुझे बेच डालो। गाय से कुछ बेसी ही मिल जाएगा।

होरी : हाय हाय, बेटी, यह तू क्या कहने लगी। *(होरी बेटियों को छाती में भर लेता है।)*

धनिया : *(रुँधा स्वर)* मेरे पास कोई गहना-गाँठा भी नहीं जो गिरो रखकर रुपए ले लें।

होरी : यही तो मैंने कहा था पर...*(एकदम)* अच्छा, कुछ भी करना पड़े, गाय न बेचेंगे। जाओ रूपा, सोना गाय को देखो। पानी तो पिलाया उसे ?

रूपा : मैं अभी जाती हूँ। दादा, मैंने गाय के बछड़े का नाम रखा है।

सोना : बछड़ा आया नहीं, नाम पहले रख लिया।

होरी : *(हँसकर)* क्या नाम रखा, मैं भी तो जानूँ।

रूपा : मटरू। मैं उसे अपने साथ लेकर सोऊँगी।

होरी : मटरू। हा, हा, हा, मटरू। बड़ा प्यारा नाम है मटरू...

[होरी हँसता है। सब हँसते हैं। लड़कियाँ भाग जाती हैं।]

होरी : क्या करूँ, धनिया, कुछ समझ में नहीं आता। इधर गिरूं तो कुआँ, उधर गिरूं तो खाई। गाय न दूं तो खेती न होगी और रायसाहब का बाकी चुकाऊँ तो गाय जाती है।

धनिया : गाय तो मैं न जाने दूँगी।

होरी : मैं ही कब चाहता हूँ। एक मित्र से गाय उधार लेकर बेच देना बहुत ही वैसी बात है लेकिन विपत में तो आदमी का धरम तक चला जाता है।

धनिया : चला तो जाता है पर...

होरी : तो बस समझ ले, बिपत आ पड़ी है।

धनिया : गोबर से भी पूछ लेते।

होरी : पूछ लेंगे पर वह तो आजकल... *(एकदम)* आजकल वह अड़ता नहीं।

धनिया : हाँ, आजकल वह अड़ता नहीं, लेकिन रूपा, सोना का क्या करोगे ? गाय पर जान देती हैं।

होरी : इनके सामने न ले जाऊँगा। कहीं चली जाएंगीं तो गाय झिंगुरी सिंह के पास पहुँचा दूँगा।

धनिया : पहुँचा आना *(कहते-कहते रो पड़ती है)* पर मैं उसे जाते कैसे देख सकूँगी। नहीं, मुझसे न देखा जाएगा।

होरी : और जैसे मैं देख सकूँगा। धनिया, ऐसा कोई माई का लाल नहीं जो इस वक्त मुझे पचीस रुपए दे दे, फिर चाहे पचास रुपए ही ले ले।

धनिया : ऐसा कोई होता तो फिर बात क्या थी !

होरी : सच कहता हूँ, अब मुझसे गाय के सामने नहीं खड़ा हुआ जाता। वह मानो अपनी काली-काली आँखों में आँसू भरकर कहती है—"क्या चार दिन में ही तुम्हारा मन मुझसे भर गया। तुमने तो वचन दिया था कि जीते-जी तुम्हें न बेचूँगा। यही वचन था तुम्हारा। मैंने

तो तुमसे कभी किसी बात का गिला नहीं किया। जो कुछ रूखा-सूखा तुमने दे दिया, वही खाकर सन्तुष्ट हो गई।''

धनिया : *(रुँधा स्वर)* लड़कियाँ तो चली गईं, अब इसे ले क्यों नहीं जाते ? जब बेचना ही है तो अभी बेच दो।

होरी : *(कम्पित स्वर)* मेरा तो हाथ नहीं उठता, धनिया। उसका मुँह नहीं देखती !

धनिया : यह तो देखती हूँ पर...

होरी : अब रहने दे, रुपए सूद पर लूँगा। भगवान ने चाहा तो सब अदा हो जाएँगे।

धनिया : *(चकित)* क्या...क्या गाय न बेचोगे ?

होरी : नहीं, तीन-चार सौ होते ही क्या हैं। एक बार ऊख लग जाए...

धनिया : *(प्रेम और गर्व से)* और क्या ? इतनी तपस्या के बाद तो घर में गऊ आई। उसे भी बेच दो। ले लो कल रुपए। जैसे और सब चुकाए जाएँगे, वैसे इसे भी चुका देंगे।

होरी : बस यही ठीक है, लेकिन भीतर बड़ी उमस है। हवा बन्द है, बरखा होगी। गाय को बाहर हवा में बाँधे देता हूँ।

धनिया : नहीं, नहीं, बाहर न बाँधो।

होरी : तू तो झूठमूठ डरती है। अरी, उसके भी तो जान है। हवा में आराम से रहेगी।

[कहते-कहते दोनों अन्दर जाते हैं। प्रकाश से फिर

समय का व्यवधान होता है। होरी फिर बाहर आकर एक ओर चला जाता है। एक क्षण बाद हीरा सशंक भाव से होरी के घर की ओर बढ़ता है, झिझकता है; बढ़ता है, झिझकता है एक बार लौट जाता है फिर आता है, हाथ में चिलम है। इस बार दृढ़ता से मकान के पीछे की ओर चला जाता है। उधर गाय बँधी है। एक बार मंच से बाहर हो जाता है फिर घर के पीछे की तरफ़ दिखाई देता है; तभी होरी का प्रवेश। वह हीरा को देखकर ठिठकता है।]

होरी : *(ठिठककर)* वहाँ कौन खड़ा है ?

हीरा : *(सामने आकर)* मैं हूँ दादा, तुम्हारे कौड़े से आग लेने आया था।

होरी : *(प्रसन्न होकर)* अच्छा, तम्बाखू है कि ला दूँ ?

हीरा : नहीं तम्बाखू तो है, दादा।

होरी : मैं सोभा को देखने गया था, वह तो आज बहुत बेहाल है।

हीरा : हाँ, पर कोई दवाई न खाए, तो क्या किया जाए। उसके लेखे तो बैद, डाक्टर और हकीम अनाड़ी हैं। भगवान के पास जितनी अक्कल है वह उसके और उसकी घरवाली के हिस्से पड़ गई।

होरी : यही तो बुराई है उसमें, अपने सामने किसी को गिनता ही नहीं। और चिढ़ने तो बीमारी में सभी हो जाते हैं।

हीरा : ठीक कहते हो, दादा। *(चिलम पीते रहते हैं।)*

होरी : तुम्हें याद है कि नहीं जब तुम्हें इंफिजा हो गया था, दवाई उठाकर फेंक देते थे। मैं तुम्हारे दोनों हाथ

पकड़ता था तब तुम्हारी भौजी तुम्हारे मुँह में दवाई डालती थी। उस पर तुम उसे हजारों गालियाँ देते थे।

हीरा : *(भरा कण्ठ)* हाँ दादा, भला वह बात भूल सकता हूँ। तुमने इतना न किया होता तो तुमसे लड़ने के लिए कैसे बच रहता।

होरी : बेटा लड़ाई-झगड़ा तो जिन्दगी का धरम है *(उठता है)* इससे जो अपने हैं वह पराये थोड़े हो जाते हैं !

हीरा : ठीक कहते हो, दादा। *(उठता है)*

होरी : और जब घर में चार आदमी रहते हैं तभी तो लड़ाई-झगड़े भी होते हैं। जिसके कोई है ही नहीं उससे कौन लड़ाई करेगा। अच्छा देर हो गई तेरी भौजी भरी बैठी होगी।

[अन्दर जाता है, हीरा बाहर, मंच पर अन्धकार छा जाता है फिर धीरे-धीरे प्रकाश उभरता है। होरी का प्रवेश, धनिया बैठी काम कर रही है। होरी को आते देखकर भभक उठती है।]

धनिया : देखी अपने सपूत की लीला। इतनी देर हो गई और अभी उसे अपने सैल से छुट्टी नहीं मिली। मैं सब जानती हूँ। मुझको सारा पता मिल गया है। भोला की वह राँड़ लड़की नहीं है, झुनिया, उसी के फेर में पड़ा रहता है।

होरी : किसने कहा तुझसे ?

धनिया : *(प्रचण्ड स्वर)* तुमसे छिपी होगी, और तो सभी जगह चर्चा चल रही है। यह है भुग्गा, वह बहत्तर घाट का पानी पिए हुए है। इसे उँगलियों पर नचा रही है और

यह समझता है कि वह इस पर जान देती है। तुम उसे समझा दो, नहीं तो कोई ऐसी-वैसी बात हो गई तो कहीं के नहीं रहोगे।

होरी : *(हँसी का स्वर)* झुनिया देखने-सुनने में तो बुरी नहीं है। उससे कर ले सगाई, ऐसी सस्ती मेहरिया और कहाँ मिली जाती है।

धनिया : (पूर्वतः) झुनिया इस घर में आए तो मुँह झुलस दूँ राँड़ का। गोबर की चहेती है तो उसे लेकर जहाँ चाहे रहे।

होरी : और जो गोबर इसी घर में लाए।

धनिया : तो ये दोनों लड़कियाँ किसके गले बाँधोगे ? फिर बिरादरी में तुम्हें कौन पूछेगा ? कोई द्वार पर खड़ा तक तो होगा नहीं।

होरी : उसे इसकी क्या परवाह ?

धनिया : इस तरह नहीं छोड़ूँगी लाला को। मर-मरकर मैंने पाला है और राज आकर झुनिया करेगी। मुँह में लुआठी लगा दूँगी राँड़ के।

[**गोबर का घबराए हुए आना।**]

गोबर : दादा, दादा, सुन्दरिया को क्या हो गया ? क्या काले ने छू लिया। वह तो पड़ी तड़प रही है। *(तीनों घबरा कर बाहर दौड़ते हैं।)*

होरी : क्या असगुन मुँह से निकालते हो। अभी तो मैं देखे आ रहा हूँ, लेटी थी।

धनिया : लेटी थी ! मैं कितना जुझती रही कि बाहर न ले

जाओ। हमारे दिन पतले हैं पर...

[बाहर निकल जाते हैं। तभी धनिया की चीख़ उठती है और होरी तेज़ी से अन्दर जाता है। अंधकार उतरने लगता है। गिरते-गिरते शोर उठता है। लोग तेज़ी-से आते दिखाई देते हैं, कुछ स्वर कानों में पड़ते हैं–'हाय-हाय गाय को विष दे दिया।' 'ऐसी वारदात तो इस गाँव में कभी नहीं हुई।' क्या गाय थी कि बस देवता रही। पाँच सेर दूध था।' 'आते देर न हुई और यह बज्र गिर पड़ा।' रुदन तेज़ होता जाता है। अन्धकार गहरा होते ही सब समाप्त हो जाता है। दो क्षण बाद प्रकाश उभरने लगता है। होरी के घर के द्वार पर मारपीट का दृश्य। होरी धनिया को मार रहा है। धनिया गाली दे रही है। दोनों लड़कियाँ बाप के पाँव से लिपटी चिल्ला रही हैं। गोबर माँ को बचा रहा है।]

होरी : तू बिना पिटे नहीं मानेगी। समझ ले तू थाने गई तो मार ही डालूँगा।

धनिया : मार ले, मार डाल दाढ़ीजार, मूँढ़ी काटे। मैं विना लाला को बड़े घर भिजवाए नहीं मानूँगी। तीन साल चक्की पिसवाऊँगी, तीन साल...

होरी : *(पीटकर)* चक्की पिसवाएगी। मैं अभी तुझे पीसे देता हूँ। ले पिसवा चक्की...चुड़ैल...

गोबर : दादा, दादा, रहने दो दादा...

होरी : हट जा गोबर *(गोबर पीछे खींचता है)* मैं आज इसके प्राण ही निकाल दूँ। (लात मारता है)

धनिया : *(चीख़कर)* तेरी लात टूटे, तेरे कीड़े पड़े, दाढ़ीजार, तुझे

भी नहीं छोड़ूँगी। तुझसे गवाही दिलवाऊँगी। बेटे के सिर पर हाथ रखकर गवाही दिलवाऊँगी। राक्षस...

होरी : *(मारने झपटता है)* राक्षसिन, चुड़ैल...

[तभी गाँव के लोग आ जाते हैं। सोभा है, दातादीन है। दातादीन डाँटते हैं।]

दातादीन : यह क्या है होरी, तुम बावले हो गए हो क्या ? कोई इस तरह घर की लक्ष्मी पर हाथ छोड़ता है। तुम्हें तो यह रोग न था। क्या हीरा की छूत तुम्हें भी लग गई ?

होरी : *(पा लागन करके)* महाराज, तुम इस बखत न बोलो। मैं आज इसकी बान छुड़ाकर दम लूँगा। मैं जितना ही तरह देता हूँ उतना ही यह सिर चढ़ती जाती है !

धनिया : *(सजल क्रोध)* महाराज, तुम गवाह रहना। मैं आज इसे और इसके हत्यारे भाइयों को जेल भेजवाकर तब पानी पिऊँगी। इसके भाई ने गाय को माहुर खिलाकर मार डाला। अब जो मैं थाने में रपट लिखाने जा रही हूँ तो यह हत्यारा मुझे मारता है...

होरी : *(दाँत पीसकर)* फिर वही बात मुँह से निकाली। तूने देखा था हीरा को माहुर खिलाते ?

धनिया : तू कसम खा जा कि तूने हीरा को गाय की नाँद के पास खड़े नहीं देखा ?

होरी : हाँ, मैंने नहीं देखा, कसम खाता हूँ।

धनिया : बेटे के माथे पर हाथ रखकर कसम खा।

होरी : *(गोबर के माथे पर हाथ रखकर काँपता हुआ)* मैं बेटे की कसम खाता हूँ कि मैंने हीरा को नाँद के पास नहीं

देखा।

धनिया : *(ज़मीन पर थूककर)* थुड़ी है तेरी झुठाई पर ! तूने रात खुद मुझसे कहा कि हीरा चोरों की तरह नाँद के पास खड़ा था और अब भाई के पक्ष में झूठ बोलता है। थुड़ी है मगर मेरे बेटे का बाल भी बाँका हुआ तो घर में आग लगा दूँगी।

होरी : *(पाँव पटककर)* धनिया गुस्सा मत दिला, नहीं तो बुरा होगा।

धनिया : बुरा क्या होगा। मार तो रहा ही है और मार ले, पापी। *(सहसा रोकर)* इस घर में आकर मैंने क्या-क्या नहीं झेला। पेट, तन काटा, एक-एक लत्ते को तरसी, एक-एक पैसा प्राण की तरह संचा, घर भर को खिलाकर आप पानी पीकर सो रही और आज उन सारे बलिदानों का यह पुरस्कार। भगवान...

गोबर : दादा, तुमने झूठी कसम खाई ?

होरी : गोबर, तू चुप रह...

दातादीन : वह चुप कैसे रहे, चुप तुम रहो। जो बात है उसका पता लगाना चाहिए। *(सोभा से)* तुम कुछ जानते हो सोभा, क्या बात हुई ?

[**होरी सिर झुकाए चला जाता है।**]

सोभा : *(लेटे-लेटे)* मैं तो महाराज आठ दिन से बाहर नहीं निकला, होरी दादा कभी-कभी जाकर कुछ दे आते हैं, उसी से काम चलता है। रात भी वह मेरे पास गए थे। किसने क्या किया मैं कुछ नहीं जानता।

दातादीन : हीरा से तुम्हारी कुछ बात नहीं हुई ?

सोभा : बात तो कुछ नहीं हुई। हाँ, साँझ वह मेरे घर खुरपी माँगने गया था। कहता था एक जड़ी खोदनी है। फिर तब से मेरी उससे भेंट नहीं हुई।

धनिया : *(एकदम)* देखा पण्डित दादा, यह उसी का काम है। सोभा के घर से खुरपी माँगकर लाया और कोई जड़ी खोदकर गाय को खिला दी।

दातादीन : यह बात साबित हो गई कि उसे हत्या लगेगी। पुलिस कुछ करे या न करे, धरम तो बिना दण्ड दिए न रहेगा। चली तो जा रूपिया, हीरा को बुला ला। कहना पण्डित दादा बुला रहे हैं।

[**रूपा जाती है।**]

दातादीन : अगर उसने हत्या नहीं की है तो गंगाजली उठा ले और चौरे पर चलकर कसम खाए...

धनिया : महाराज, उसके कसम का भरोसा नहीं। जब इसने झूठी कसम खा ली जो बड़ा धर्मात्मा बनता है तो हीरा का क्या विश्वास।

गोबर : खा ले झूठी कसम, बंस का अन्त हो जाए। बूढ़े जीते रहें। जवान जीकर क्या करेंगे।

रूपा : *(आकर)* काका घर में नहीं हैं पण्डित दादा। काकी कहती है कहीं चले गए।

दातादीन : कहाँ चले गए, पूछा नहीं ?

रूपा : कहती है बताकर नहीं गए। लुटिया, डोरी और डण्डा सब लेकर गए हैं। साइत रुपए भी ले गए। काकी

ने आले में रक्खे थे। वहाँ नहीं हैं।

धनिया : मुँह में कालिख लगाकर भागा है।

सोभा : भाग कर कहाँ जाएगा। गंगा नहाने न चला गया हो।

धनिया : गंगा जाता तो रुपए क्यों ले जाता और आजकल कोई परब भी तो नहीं है।

दातादीन : भागने से बच नहीं सकता। धरम उसे नहीं छोड़ेगा। भगवान उसे अवश्य दण्ड देंगे। मैं अभी पता लगाकर आता हूँ।

[दातादीन लकड़ी सम्भाल कर जाते हैं। होरी बाहर से आता है। धनिया की ओर आँख बचाकर देखता है। अन्दर चला जाता है। गोबर और धनिया भी जाते हैं। एक क्षण के लिए मंच ख़ाली हो जाता है। फिर दूसरी ओर से शोर पास आता है। उसी क्षण दारोग़ा जी वहाँ प्रवेश करते हैं। पीछे-पीछे हाथ बाँधे दातादीन, झिंगुरी सिंह, नोखेराम, चार प्यादे, लाला पटेश्वरी आदि हैं।]

दारोग़ा : होरी कहाँ है ?

दातादीन : *(आवाज़ लगाकर)* होरी, होरी महतो—

[होरी आता है दारोग़ा जी को देखकर काँपता है। सिमट जाता है। दारोग़ा एक क्षण उसे भाँपते हैं। फिर पूछते हैं।]

दारोग़ा : तुझे किस पर शुबहा है ? *(धनिया भी आती है)*

होरी : *(ज़मीन छूकर और हाथ बाँधकर)* मेरा शुबहा किसी पर नहीं है सरकार, गाय अपनी मौत से मरी है। बुढ्ढी हो गई थी।

धनिया : गाय मारी है तुम्हारे भाई हीरा ने। सरकार ऐसे बौड़म नहीं हैं जो कुछ तुम कह दोगे यह मान लेंगे। यहाँ जाँच-तहकीकात करने आए हैं।

दारोग़ा : यह कौन औरत है ?

दातादीन :
पटेश्वरी : *(एक-साथ)* होरी की घरवाली है सरकार।
झिंगुरीसिंह :

दारोग़ा : तो इसे बुलाओ, मैं पहले इसी का बयान लिखूँगा। वह कहाँ है—हीरा ?

दातादीन : वह तो आज सबेरे से ही कहीं चला गया है सरकार।

दारोग़ा : मैं उसके घर की तलाशी लूँगा।

होरी : *(सहमकर)* तलाशी...

[सब एक-दूसरे को देखते हैं, फुसफसाते हैं।]

पटेश्वरी : यह सब कमाने के ढंग हैं। और आया क्यों है। जब आया है तो बिना कुछ लिए-दिए थोड़े ही जाएगा।

झिंगुरीसिंह : *(होरी से)* निकालो जो कुछ देना है। यों गला न छूटेगा।

[होरी पागल-सा देखता है। दारोग़ा चीख़ते हैं।]

दारोग़ा : कहाँ है हीरा का घर, मैं उसके घर की तलाशी लूँगा।

[होरी घबराता है। दातादीन, झिंगुरी सिंह आदि उसे बाहर ले जाते हैं। पटेश्वरी दारोग़ा के पास जाता है।]

पटेश्वरी : तलाशी लेकर क्या करेंगे हुजूर उसका भाई ताबेदारी के लिए हाजिर है।

दारोग़ा : *(इधर-उधर देखकर अलग को)* कैसा आदमी है ?

पटेश्वरी : बहुत ही गरीब हुजूर। भोजन का भी ठिकाना नहीं।

दारोग़ा : सच।

पटेश्वरी : हाँ हुजूर, ईमान से कहता हूँ।

दारोग़ा : अरे, तो क्या एक पचासे का भी डौल नहीं ?

पटेश्वरी : कहाँ की बात हुजूर ! दस मिल जाएँ तो हजार समझिए। पचास तो पचास जनम में भी मुमकिन नहीं, और वह भी जब कोई महाजन खड़ा हो जाए।

दारोग़ा : *(सोचकर)* तो फिर उसे सताने से क्या फायदा ! मैं ऐसों को नहीं सताता जो आप ही मर रहे हों।

पटेश्वरी : *(एकदम)* नहीं हुजूर, ऐसा न कीजिए। नहीं तो फिर हम कहाँ जाएँगे। हमारे पास दूसरी कौन-सी खेती है।

दारोग़ा : तुम इलाके के पटवारी हो जी, कैसी बातें करते हो ?

पटेश्वरी : जब ऐसा ही कोई अवसर आ जाता है तो आपकी बदौलत हम भी कुछ पा जाते हैं। नहीं तो पटवारी को पूछता कौन है।

दारोग़ा : अच्छा, आओ तीस रुपए दिलवा दो। बीस रुपए हमारे, दस तुम्हारे।

पटेश्वरी : चार मुखिया हैं। इसका ख्याल कीजिए।

दारोग़ा : अच्छा, आधे-आधे रखो और जल्दी करो। मुझे देर हो रही है।

[होरी का प्रवेश, प्रसन्न है। अंगोछे में रुपए बँधे हैं। तभी सहसा धनिया उसके पास पहुँचती है। अब तक वह घर के द्वार से झाँक-झाँककर देख रही थी। एक बार आगे तक जाकर पटेश्वरी और दारोग़ा की बात भी सुन गयी थी। ताक में थी। तुरन्त अंगोछा छीन

लेती है। रुपए बिखर जाते हैं। वह फुँकारती है।]

धनिया : ये रुपए कहाँ लिए जा रहा है ? बता। घर के परानी रात-दिन मरें और दाने-दाने को तरसें, लत्ता भी पहनने को मयस्सर न हो और अंजुली भर रुपए लेकर चला है इज्जत बचाने। ऐसी बड़ी है तेरी इज्जत। दारोग़ा तलाशी ही तो लेगा। ले ले जहाँ चाहे तलाशी। एक तो सौ रुपए की गाय गई उस पर से यह पलेथन, वाह री तेरी इज्जत।

[सब स्तम्भित से खड़े देखते हैं। दारोगा जी का मुँह उतर जाता है। खिसिया कर बोलते है।]

दारोग़ा : मुझे ऐसा मालूम होता है कि इस शैतान की ख़ाला ने हीरा को फँसाने के लिए .खुद गाय को ज़हर दे दिया।

धनिया : *(हाथ मटकाकर)* हाँ दे दिया। अपनी गाय थी मार डाली, किसी दूसरे का जानवर तो नहीं मारा। तुम्हारे तहकीकात में यही निकलता है तो यही लिख दो। पहना दो मेरे हाथों में हथकड़ियाँ।

होरी : *(चीख़कर)* धनिया तू...*(लपकता है)*

गोबर : *(अड़ जाता है)* अच्छा दादा, अब बहुत हुआ। पीछे हट जाओ, नहीं तो कहे देता हूँ, मेरा मुँह न देखोगे।

[होरी पीछे हटता है, धनिया शेर होती है।]

धनिया : तू हट जा गोबर, देखूँ तो क्या करता है मेरा। दारोग़ा जी बैठे हैं। इसकी हिम्मत देखूँ।

[होरी फिर सिर झुका लेता है। लोग रुपए चुनते हैं और दारोग़ा जी चलने का इशारा करते हैं। धनिया

और तेज़ होती है।]

धनिया : जिसके रुपए हों, ले जाकर उसे दे दो। हमें किसी से उधार नहीं लेना है। हम बाकी चुकाने को पचीस रुपए माँगते थे तो किसी ने न दिया। आज अंजुली भर रुपए ठनाठन निकाल कर दे दिए, बांट-बखरा होने वाला था न ! ये हत्यारे गाँव के मुखिया हैं, गरीबों का खून चूसने वाले !

[वह तेज़ होती हुई अन्दर जाती है। नेता लोग धीरे-धीरे बाहर जाते हैं। दारोग़ा जी जाते-जाते कहते हैं।]

दारोग़ा : औरत है दिलेर।

पटेश्वरी : दिलेर क्या हुजूर, कर्कशा है। ऐसी औरत को तो गोली से मार दे।

दारोग़ा : तुम लोगों का काफिया तंग कर दिया उसने। चार-चार तो मिलते ही।

पटेश्वरी : हुजूर के भी तो पन्द्रह थे।

दारोग़ा : मेरे कहाँ जा सकते हैं। वह न देगा गाँव के मुखिया देंगे और पन्द्रह रुपए की जगह पूरे पचास देंगे। आप चटपट इन्तज़ाम कीजिए।

पटेश्वरी : *(हँसकर)* हुजूर, बड़े दिल्लगीबाज हैं।

दारोग़ा : *(कड़ककर)* यह ख़ुशामद फिर करना। इस वक्त तो मुझे पचास रुपए दिलवाइए नकद। मैं पन्द्रह मिनट का समय देता हूँ। अगर इतनी देर में पूरे पचास न आए तो तुम चारों के घर की तलाशी होगी और गण्डा सिंह को जानते हो ? उसका मारा पानी भी नहीं

माँगता। डाके में सारे गाँव को कालेपानी भिजवा सकता हूँ।

[वह बाहर जाता है। नेता लोगों के मुँह पर हवाइयाँ उड़ती हैं। मंच पर धीरे-धीरे अंधकार उतरने लगता है। पर्दा गिर जाता है।]

अंक दो

[पर्दा उठने पर। मंच पर रात का अँधेरा छाया है। पृष्ठभूमि में जुगनू-से चमकते हैं। शीत है, होरी के घर का द्वार नहीं दिखाई देता। तभी दूसरी ओर से मंच पर होरी फटा कम्बल लपेटे धनिया के साथ प्रवेश करता है। हाथ में मिट्टी के तेल की जलती ढिबरी है। दोनों बातें कर रहे हैं।]

होरी : बात क्या है ? बोलती क्यों नहीं। गोबर को भेज कर मुझे क्यों नहीं बुलवा लिया ?

धनिया : *(पास बैठकर)* गोबर ने मुँह में कालिख लगा दी।

होरी : क्या हुआ ? क्या, किसी से मारपीट कर बैठा ?

धनिया : चलकर पूछो उसी राँड़ से।

होरी : साफ-साफ क्यों नहीं कहती ? किस राँड़ को कह रही है ?

धनिया : उसी झुनिया को और किसको। कई महीने का पेट है। न रहता तो अभी बात न खुलती। चुड़ैल ने लेके मेरे लड़के को चौपट कर दिया।

होरी : लाया तो वही होगा ? कहाँ है वह ?

धनिया : कुछ दूर तक तो आगे-आगे आता रहा फिर न जाने किधर सरक गया। यह पुकारती रही। न लौटा तो

मेरे पास आयी। बैठी रो रही है। मैं तुमसे कहे देती हूँ। मैं उसे अपने घर में न रक्खुँगी। गोबर को रखना हो अपने सिर पर रखे।

होरी : उसे घर में आने ही न देना चाहिए था।

धनिया : सब कुछ करके हार गयी। टलती नहीं, धरना दिए बैठी है।

होरी : अच्छा चल, देखूँ कैसे नहीं उठती। घसीटकर बाहर निकाल दूँगा।

[दोनों मंच के बीच में आ जाते हैं। और होरी के घर के द्वार पर प्रकाश चमकता है। धनिया ठिठककर होरी का हाथ पकड़ती है।]

धनिया : देखो, हल्ला न मचाना, नहीं तो सारा गाँव जाग उठेगा और बात फैल जाएगी।

होरी : हमारे घर में उसका क्या रखा है। मैं तो गोबर को भी निकाल बाहर करूँगा। क्यों अपने मुँह में कालिख लगवाऊँ।

धनिया : *(गम्भीर)* कालिख जो लगनी थी वह तो अब लग चुकी। गोबर ने नैया डुबो दी।

होरी : गोबर ने नहीं डुबोयी, डुबोयी इसी ने। वह तो बच्चा था। इसके पँजे में आ गया। चल पूछते हैं उससे।

[होरी ठिठकता है, धनिया को थपथपाता है। फिर दोनों किवाड़ों के दराज़ से झाँकते हैं और फिर एक-दूसरे को देखते हैं। फिर सहसा होरी किवाड़ खोल देता है। तेल की कुप्पी का प्रकाश मंच पर पड़ता है और उसी के साथ काँपती, रोती झुनिया आगे आती है।]

झुनिया : कौन ?...दादा *(पैरों पर गिर पड़ती है)* दादा, अब तुम्हारे सिवाय मुझे दूसरा ठौर नहीं, चाहे मारो, चाहे काटो लेकिन अपने द्वार से दुरदुराओ मत।

होरी : *(प्यार से पीठ पर हाथ फेरता हुआ)* डर मत बेटी, डर मत। तेरा घर है, तेरा द्वार है, तेरे हम हैं। आराम से रह। हमारे रहते कोई तुझे तिरछी आँखों न देख सकेगा। भोज-भात जो लगेगा, वह हम सब ले लेंगे, तू खातिर जमा रख।

झुनिया : *(और भी पैरों से चिपटती है)* दादा, अब तुम्हीं मेरे बाप हो और अम्माँ तुम्हीं मेरी माँ हो। मैं अनाथ हूँ। मुझे सरन दो, नहीं तो मेरे काका और भाई कच्चा ही खा जाएँगे।

धनिया : तू चल घर बैठ, मैं देख लूँगी काका और भैया को। संसार में उन्हीं का राज नहीं है। बहुत करेंगे, अपने गहने ले लेंगे। फेंक देना उतारकर।

होरी : क्यों बेटी, तुझे कुछ मालूम है, गोबर किधर गया है ? तेरा मन क्या कहता है, है गाँव में ही कि कहीं बाहर चला गया ?

झुनिया : मुझे तो शंका होती है, कहीं बाहर चले गए हैं।

होरी : यही मेरा मन कहता है। कैसी नादानी की। हम उसके दुसमन थोड़े ही थे। जब भली या बुरी एक बात हो गई तो उसे निभानी ही पड़ती है। इस तरह भागकर तो इसने हमारी जान आफत में डाल दी।

धनिया : *(झुनिया को अन्दर ले जाती है)* कायर कहीं का। जिसकी

बाँह पकड़ी उसका निबाह करना चाहिए कि मुँह में कालिख लगाकर भाग जाना चाहिए। अब जो आए तो घर में न पैठने दूँ।

[दोनों अन्दर जाती हैं। धीरे-धीरे अंधकार मंच पर छा जाता है। दो क्षण बाद फिर प्रकाश फैलने लगता है। मंच पर पंचायत का दृश्य। होरी के घर के सामने बहुत लोग बैठे हैं ! हुक्का-चिलम चल रहा है। पंच गरदन हिला-हिलाकर सलाह करते हैं। फिर होरी की पुकार होती है।]

पटेश्वरी : होरी को बुलाया जाए। वह पंचायत का फैसला सुन ले।

[होरी और धनिया का सिर झुकाए अन्दर से प्रवेश।]

झिंगुरी सिंह : पंचायत ने तुम्हारे मामले पर खूब गौर किया है। तुमने उस कुलटा को घर में रखकर समाज में विष बोया है। अगर गाँव में यह अनीति चली तो किसी की आबरू सलामत न रहेगी। झुनिया को देखकर दूसरी विधवाओं का मन बढ़ेगा। पंचायत यह अनीति नहीं देख सकती। उसने तुम पर सौ रुपए नगद और तीन मन अनाज डाँड़ लगाने का फैसला किया है।

धनिया : *(रुँधा कण्ठ)* पंचो, गरीब को सताकर सुख न पाओगे। हम तो मिट जाएँगे, लेकिन मेरा सराप तुमको जरूर-से-जरूर लगेगा। मुझसे इतना बड़ा जरीबाना इसीलिए लिया जा रहा है कि मैंने अपनी बहू को क्यों अपने घर में रख लिया। क्यों उसे सड़क की भिखारिन नहीं बना दिया। यही न्याय है, ऐं...

होरी : *(डाँट कर)* तू क्यों बोलती है धनिया ? पंच में परमेश्वर रहते हैं। उनका जो न्याय है वह सिर आँखों पर। पंचो, हमारे पास जो कुछ है, वह अभी खलिहान में है। एक दाना भी घर में नहीं आया। जितना चाहे ले लो...

धनिया : *(दाँत कटकटाकर)* कैसे ले लो। मैं न एक दाना अनाज दूँगी, न एक कौड़ी डाँड़। जिसमें बूता हो चलकर मुझ से ले। हमें नहीं रहना है बिरादरी में। बिरादरी में रहकर हमारी मुकुत न हो जाएगी।

होरी : *(हाथ जोड़कर)* धनिया तेरे पैरों पड़ता हूँ, चुप रह। हम सब बिरादरी के चाकर हैं, उसके बाहर नहीं जा सकते। वह जो डाँड़ लगाती है उसे सिर झुकाकर मंजूर कर।

[बच्चे के रोने की आवाज़।]

धनिया : *(तेज़ी-से घर के अन्दर जाती हुई)* कैसे मंजूर करूँ। कोई न्याय है। मैं नहीं करती। देखूँगी, कैसे डाँड़ लेते हैं।

होरी : पंचो, मुझे अपने जवान बेटे का मुँह देखना नसीब न हो, अगर मेरे पास खलिहान के अनाज के सिवा और कोई चीज हो। मैं बिरादरी से दगा न करूँगा। पंचों को मेरे बाल-बच्चों पर दया आए तो परबरिस करे नहीं तो मैं अनाज लाता हूँ।

दातादीन : बिहारी ! तीन मन अनाज पंचायत में पहुँचा देना।

बिहारी : जो आज्ञा महाराज।

[होरी जाता है। और एक किसान के साथ अनाज ढो-ढोकर लाता है। दोनों एक ओर से आते हैं दूसरी ओर से जाते हैं। बिहारी निगरानी करता है। होरी

बोलता है।]

होरी : यह जो अब के इतना अनाज हुआ सब धनिया के पुरुषार्थ से हुआ। झुनिया भीतर का सारा काम कर लेती थी और धनिया अपनी लड़कियों के साथ खेती में जुट गयी थी।

बिहारी : यह भी कहने की बात है महतो, सारा गाँव जानता है।

[जाता है ख़ाली करके लौटता है। दूसरी बार आता है तो धनिया झगड़ती आती है।]

धनिया : अच्छा अब रहने दो, ढो चुके बिरादरी की लाज। बच्चों के लिए भी कुछ छोड़ोगे कि सब बिरादरी के भाड़ में झोंक दोगे ?

होरी : *(टोकरी सिर पर रखता हुआ)* पर पंचों से पूछे बिना एक दाना भी न लूँगा।

धनिया : *(टोकरी पकड़कर)* तुम न लेना पर इसे तो मैं न ले जाने दूँगी। चाहे तुम मेरी जान ही ले लो। तुमने अकेले ही सब कुछ नहीं कर लिया है। मैं भी अपनी बच्चियों के साथ सती हुई हूँ।

होरी : धनिया तू हट जा...

धनिया : मैं नहीं हटूँगी। सीधे टोकरी यहाँ रख दो नहीं तो आज से सदा के लिए नाता टूट जाएगा। कहे देती हूँ।

[होरी क्षण भर सोचता है। फिर एकदम टोकरी छोड़ देता है।]

होरी : तू ठीक कहती है धनिया, दूसरे के हिस्से पर मेरा कोई जोर नहीं है। जो कुछ बचा है वह ले जा। मैं जाकर

घर रेहन रखने का प्रबन्ध करता हूँ।

[**दोनों किसान चले जाते हैं।**]

धनिया : *(क्रोध में)* क्या कहा, घर रेहन रखोगे ? मैं कहती हूँ तुम इतने भोंदू क्यों हो ? तुम्हारे मुँह में जीभ नहीं है कि उन पंचों से पूछते तुम कहाँ के बड़े धर्मात्मा हो। दातादीन का लड़का मातादीन एक चमारिन से फँसा है। पटेश्वरी ने ब्याज खा-खाकर हजारों की सम्पत्ति बना ली है। झिंगुरी सिंह की दोनों औरतें घूँघट की ओट सत्तर घाट का पानी पीती हैं।

होरी : *(ज़ोर से)* चुप रह, बहुत बढ़-चढ़कर न बोल। बिरादरी से अपराध तो क्षमा करवाना ही पड़ेगा।

धनिया : क्यों करवाना पड़ेगा ? किसी के घर चोरी की है, किसी का माल काटा है ? मेहरिया रख लेना पाप नहीं, हाँ, रखकर छोड़ देना पाप है। मेरे तो भाग फूट गए थे कि तुम जैसे मर्द से पाला पड़ा।

होरी : मैं तेरे बाप के पाँव पड़ने गया था ? वही तुझे मेरे गले बाँध गया।

धनिया : पत्थर पड़ गया था उनकी अक्कल पर। और उन्हें क्या कहूँ ! न जाने क्या देखकर लट्टू हो गए। ऐसे कोई बड़े सुन्दर भी तो न थे तुम।

होरी : *(मुस्कराकर)* मैं न था तो न सही, तुम तो थीं और अब तुम्हारा पोता सुन्दर है कि नहीं। अनाज गया, घर भी चला जाए पर...लाख रुपए का बालक तो मिल गया। उसे तो कोई न छीन लेगा।

धनिया : उसे कौन छीन सकता है। अब तो बस गोबर घर लौट आए, धनिया अलग झोंपड़ी में भी सुखी रहेगी।

[**दोनों के चेहरों पर प्रकाश चमकता है। दोनों अन्दर जाते हैं। और एक क्षण बाद भोला वहाँ तेज़ी-से प्रवेश करता है।**]

भोला : महतो, होरी महतो।

[**होरी अन्दर से आता है।**]

होरी : आओ, आओ, भोला महतो।

भोला : आया तो हूँ। मैं पूछता हूँ यही है तुम्हारा कौल। इसी मुँह से तुमने ऊख पेर कर मेरे रुपए देने का वादा किया था। अब तो कभी की ऊख पेर चुके। लाओ रुपए मेरे हाथ में।

होरी : महतो, तुम तो जानते हो इस बार ऊख हुई कहाँ थी।

भोला : मैं कुछ नहीं जानता।

होरी : नहीं महतो इस बार कुछ नहीं मिला। दाने-दाने की तंगी हो रही है।

भोला : मैंने कह दिया मैं कुछ नहीं जानता। मैं रुपए लेकर जाऊँगा।

होरी : *(झुँझलाकर)* तो महतो, इस बखत तो मेरे पास रुपए हैं नहीं और न मुझे कहीं उधार ही मिल सकते हैं। मैं कहाँ से लाऊँ। विश्वास न हो तो घर में आकर देख लो। जो कुछ मिले उठाकर ले जाओ।

भोला : *(कठोर स्वर)* मैं तुम्हारे घर में क्यों तलासी लेने जाऊँ। और न मुझे इससे मतलब है कि तुम्हारे पास रुपए हैं या नहीं।

होरी : तो तुम्हें काहे से मतलब है ?

भोला : रुपयों से। तुमने ऊख पेर कर रुपए देने को कहा था। ऊख पेर चुके। अब मेरे रुपए मेरे हवाले करो।

होरी : रुपए मेरे पास नहीं हैं। अब जो कहो वह करूँ।

भोला : मैं क्या कहूँ ?

होरी : मैं तुम्हीं पर छोड़ता हूँ।

भोला : मैं तुम्हारे दोनों बैल खोल ले जाऊँगा।

[**होरी विस्मय से काँप उठता है।**]

होरी : क्या बैल ले लोगे ?

भोला : और क्या।

होरी : *(दीन स्वर)* दोनों बैल ले लोगे मेरा सर्वनास न हो जाएगा।

भोला : तुम्हारे बनने-बिगड़ने की मुझे परवाह नहीं है। मुझे अपने रुपए चाहिए।

होरी : जो मैं कह दूँ मैंने रुपए दे दिए।

भोला : *(सहमता है फिर तेज़ होता है)* अगर तुम हाथ में गंगाजली लेकर कह दो कि मैंने रुपए दे दिए तो सबर कर लूँगा।

होरी : कहने को मन तो चाहता है लेकिन कहूँगा नहीं।

भोला : तुम कह ही नहीं सकते।

होरी : हाँ भइया, मैं नहीं कह सकता। हँसी कर रहा था *(एक क्षण ठिठककर)* लेकिन भोला, तुम मुझसे बैर क्यों पाल रहे हो। झुनिया मेरे घर में आ गयी तो मुझे कौन-सा सरग मिल गया।

[**तभी तेज़ी-से धनिया अन्दर से आती है।**]

धनिया : मिल गया सरग। महतो बैल माँग रहे हैं तो दे क्यों नहीं देते। हमारे हाथ तो नहीं काट लेंगे। अब तक अपनी मजदूरी करते थे अब दूसरों की मजूरी करेंगे। मैं न जानती थी यह हमारे बैरी हैं, नहीं तो गाय लेकर अपने सिर बिपत क्यों लेती। उसी निगोड़ी का पौरा जिस दिन से आया घर तहस-नहस हो गया।

होरी : लड़का हाथ से गया। दो सौ रुपया डाँड़ अलग भरना पड़ा।

भोला : तुम अपने दो सौ को रोते तो, यहाँ लाखों रुपयों की आबरू बिगड़ गयी। तुम्हारी कुशल इसी में है कि उसे घर से निकाल दो, फिर न हम बैल माँगेंगे, न गाय का दाम माँगेंगे। उसने हमारी नाक कटवाई है तो मैं भी उसे ठोकरें खाते देखना चाहता हूँ।

होरी : क्या कहते हो, महतो। वह तुम्हारी बेटी है।

भोला : हाँ, वह मेरी बेटी है। लेकिन मुँहजली ने सात पुस्त का नाम डुबा दिया। और तुम उसे घर में रखे हुए हो। यह छाती पर मूँग दलना नहीं तो क्या है।

धनिया : *(दृढ़ता से)* महतो, मेरी भी सुन लो। जो बात तुम चाहते हो, वह न होगी, सौ जनम न होगी। झुनिया हमारी जान के साथ है।

भोला : तुम उसे घर से न निकालोगे ?

धनिया : नहीं। तुम बैल ही तो ले जाने को कहते हो तो ले जाओ, अगर इससे तुम्हारी कटी नाक जुड़ती हो तो

जोड़ लो। पुरुखों की आबरू बचती हो तो बचा लो...तुम अब बूढ़े हो गए महतो, पर आज भी तुम्हें सगाई की धुन सवार है, फिर वह तो बच्चा है।

भोला : सुनते हो होरी इसकी बातें ? अब मेरा दोस नहीं। मैं बिना बैल लिए न जाऊँगा।

होरी : ले जाओ।

भोला : फिर रोना मत कि मेरे बैल खोल ले गए !

होरी : नहीं रोऊँगा।

[भोला आगे बढ़ता है। तभी झुनिया बच्चे को गोदी में लिए तेज़ी-से बाहर आती है और कम्पित स्वर में कहती है।]

झुनिया : काका ! लो इस घर से मैं निकली जाती हूँ और जैसी तुम्हारी मनोकामना है उसी तरह भीख माँगकर अपना और बच्चे का पेट पालूँगी...

भोला : *(खिसियाकर)* दूर हो मेरे सामने से। भगवान न करे मुझे फिर तेरा मुँह देखना पड़े। कुलच्छनी कहीं की। अब तेरे लिए डूब मरना ही उचित है।

[तभी धनिया दौड़कर झुनिया को पकड़ती है।]

धनिया : तू कहाँ जाती है बहू, चल घर में। यह तेरा घर है। हमारे जीते जी भी और हमारे मरने के पीछे भी। मुझ पर धौंस जमाता है नीच। ले जा, बैलों का रकत पी...

झुनिया : *(रोती हुई)* अम्माँ, जब अपना बाप ही मुझे धिक्कार रहा है तो मुझे डूब ही मरने दो। मुझ अभागिनी के

कारण तो तुम्हें दुख ही मिला। तुमने इतने दिन मुझे जिस प्रेम से रखा, माँ भी नहीं रखती।

धनिया : यह तेरा बाप है ? तेरा बैरी है, हत्यारा। माँ होती; तो अलबत्ते उसे कलक होती। ला सगाई। मेहरिया जूतों से न पीटे तो कहना।

[झुनिया को पकड़कर घर में ले जाती है। भोला बैलों की तरफ़ जाता है। होरी विमूढ़ शून्य में ताकता खड़ा रहता है। धीरे-धीरे अंधकार उतरकर गहरा होता है। दो क्षण बाद प्रकाश उभरता है, और पूरे दृश्य पर छा जाता है। मंच पर होरी के घर का चबूतरा, मार्ग तथा अन्य घरों के द्वार दिखाई देते हैं। सोना व झुनिया कुएँ के पास खड़ी बातें कर रही हैं।]

सोना : जब से भोला हमारे बैल खोल ले गए और दादा ने दातादीन पण्डित के साथ सांझे की खेती शुरू की मातादीन भी यहाँ आने लगे, बड़ा खराब आदमी है।

झुनिया : मुझे तो बड़ा भला आदमी लगता है। क्या खराबी है उसमें।

[धनिया का प्रवेश]

धनिया : तुम यहाँ खड़ी क्या कर रही हो ? तुम्हारे दादा आते होंगे।

सोना : अरे हाँ अम्माँ। आज तो दादा बहुत-से रुपए लाएँगे।

झुनिया : मिल खुल जाने का यही फायदा है। अच्छा किया जो दादा ने ऊख बेच दी। गुड़ के भाव चीनी मिलेगी तो गुड़ लेगा ही कौन ? अब कम-से-कम सौ रुपए की आसा है।

सोना : इतनी में एक मामूली गोई आ जाएगी।

धनिया : आ तो जाएगी पर महाजनों से बचे तब न। इस झिंगुरी के सभी रिनियाँ हैं। देखा नहीं दुलारी, सहुआइन, मंगरूसाह सब ऊख काटते वक्त कैसे भागे आये थे। अच्छा आओ, अन्दर आओ, कुछ चना-चबेना तो चाहिए ही।

[सब अन्दर जाती हैं। एक क्षण बाद होरी मुँह लटकाए आता है। पीछे-पीछे एक किसान ताड़ी पिए झूमता आता है।]

किसान : झिंगुरिया ने सारा-का-सारा ले लिया, होरी काका। चबेना को भी एक पैसा न छोड़ा। हत्यारा कहीं का। रोया, गिड़गिड़ाया पर उस पापी झिंगुरी को दया नहीं आयी।

होरी : ताड़ी पिए हो, उस पर कहते हो एक पैसा भी न छोड़ा।

किसान : साँझ हो गयी; जो पानी की बूँद भी कण्ठ तले गई हो, तो गौ-मांस बराबर। एक इकन्नी मुँह में दबा ली थी। उसकी ताड़ी पी ली। सोचा साल भर पसीना गारा है तो एक दिन ताड़ी पी लूँ, मगर सच कहता हूँ नसा नहीं है। एक आने में क्या नसा होगा। हाँ झूम रहा हूँ जिससे लोग समझे खूब पिए है। बड़ा अच्छा हुआ काका बेबाकी हो गई। बीस लिए थे उसके एक सौ साठ भरे, कुछ हद है।

[बोलता हुआ जाता है। होरी एक क्षण उसे देखता है तभी रूपा आती है। चिल्लाती है।]

रूपा : दादा आ गए, दादा आ गए। *(अन्दर जाती है और दूसरे*

ही क्षण सब आती हैं। रूपा पानी लिए है। सोना चिलम लिए है। धनिया चबेना और नमक लायी है। झुनिया भी चौखट पर खड़ी है। सब मुस्कराकर उत्सुकता से देखते हैं पर होरी बैठा है—उदास, ग्लानिग्रस्त, गुमसुम)

धनिया : कितने की तौल हुई ?

होरी : एक सौ बीस मिले पर सब वहीं लुट गए। धेला भी न बचा।

[**सब सन्न रह जाते हैं।**]

धनिया : क्या एक धेला भी न बचा ?

होरी : नहीं।

धनिया : *(तेज़ होकर)* तुम जैसा घामड़ आदमी भगवान ने क्यों रचा। उठाकर सारे रुपए बहनोइयों को दे दिए। अब ग़ोई कहाँ से आएगी ? हल में क्या तुम मुझे जोतोगे ? या आप जुतोगे ?

होरी : जो होगा देखा जाएगा।

धनिया : कैसे देखा जाएगा। पूस की ठण्ड है और किसी के देह पर लत्ता नहीं। ले जाओ सबको और नदी में डुबो दो।

होरी : *(सिर झुकाए)* मजूरी तो मिलेगी। मजूरी करके खाएँगे।

धनिया : कहाँ है इस गाँव में मजूरी ? और कौन मुँह लेकर मजूरी करोगे ? महतो नहीं कहलाते।

होरी : *(चिलम के कश लगाता हुआ)* मजूरी करना कोई पाप नहीं है। मजूर बन जाए तो किसान हो जाता है। किसान बिगड़ जाए तो मजूर हो जाता है। मजूरी करना

भाग्य में न होता तो यह सब विपत क्यों आती। क्यों गाय मरती। क्यों लड़का नालायक...

धनिया : *(एकदम)* तुम सब-की-सब क्यों घेरे खड़ी हो ? *(होरी की ओर देखते हुए)* झिंगुरी से तुम कह देते कि एक रुपया मुझे दे दो, नहीं तो एक पैसा न दूँगा, जाकर अदालत में लेना तो वह जरूर दे देता।

होरी : *(लजाकर)* हाँ, यह तो चूक हो गई। बहुत होता बकाया पर दो-चार आने सूद ले लेते। मगर अब तो चूक हो ही गई। अच्छा *(शंख बजता है)* ओहो ठाकुर ध्यानसिंह की कथा पूरी हो गई। आरती हो रही है। जाना चाहिए पर पास में एक पैसा भी नहीं। खाली हाथ आरती कैसे लूँगा। लोग हँसेंगे, हँस लें परवा नहीं।

[दृढ़ता से बाहर जाता है, अंधकार उतरने लगता है। दो क्षण बाद प्रकाश होने पर, कई व्यक्ति होरी को उठाए लाते हैं। धनिया, रूपा, सोना, झुनिया सब रोती हुई साथ आती हैं। धनिया खाट लाकर बिछाती है–रोती है।]

धनिया : अरी सोना, दौड़कर पानी ला और जाकर सोभा से कह दे, दादा बेहाल हैं। हाय भगवान अब मैं कहाँ जाऊँ।...अब मैं किसकी होकर रहूँगी, कौन मुझे धनिया कहकर पुकारेगा !

पटेश्वरी : क्या करती है,धनिया,होश सम्भाल। होरी को कुछ नहीं हुआ। गर्मी से अचेत हो गए हैं। अभी होश आया जाता है।

धनिया : क्या करूँ लाला, जी नहीं मानता। भगवान ने सब

कुछ हर लिया। मैं सबर कर गयी। अब सबर नहीं होता। हाय रे मेरा हीरा।

[सोना पानी लाती है। लाला छींटे देते हैं। धनिया व बेटियाँ हवा करती हैं। होरी आँखें खोलकर उड़ती नज़र से ताकता है। धनिया विह्वल होकर लिपट-सी जाती है।]

धनिया : अब कैसा जी है तुम्हारा ? मेरे तो परान नहों में समा गए थे।

होरी : *(कातर स्वर)* अच्छा हूँ। न जाने कैसा जी हो गया था !

धनिया : *(सस्नेह ताड़ना)* देह में दम तो है नहीं, काम करते हो जान देकर। बच्चों का भाग था, नहीं तो तुम ले ही डूबे थे।

पटेश्वरी : *(हँसकर)* धनिया तो रो-पीट रही थी।

होरी : सचमुच तू रोती थी धनिया ?

धनिया : इन्हें बकने दो तुम। पूछो यह क्यों कागद छोड़कर घर से दौड़े आए थे ?

पटेश्वरी : *(चिढ़ाकर)* तुम हीरा, हीरा कहकर रोती थी। अब लाज के मारे मुकरती है। छाती पीट रही थी।

होरी : *(करुण स्वर)* पगली है और क्या ? अब न जाने कौन-सा सुख देखने को मुझे जिलाए रखना चाहती है।

पटेश्वरी : ऐसे हिम्मत क्यों हारते हो। अच्छा मैं तो जाता हूँ।

[जाता है। इसी समय कुत्तों के भूँकने की आवाज आती है। सभी उधर देखने लगते हैं। सहसा रूपा, सोना उधर बढ़ती हैं। रूपा चीख़ती हुई भागती है।]

रूपा : भैया आए, भैया आए। *(भागती है)*

सोना : भैया। *(दो कदम बढ़कर रुक जाती है)*

धनिया : *(विह्वल)* गोबर।

[झुनिया घूँघट उठाकर देखती है और द्वार पर खड़ी हो जाती है। गोबर आता है। नया रूप, नया रंग, शहरी कपड़े। आकर माँ-बाप के चरण छूता है।]

गोबर : अम्माँ...

धनिया : गोबर बेटा, बेटा, *(कण्ठ रुँध जाता है)* जुग-जुग जियो। खुश रहो।

[कई क्षण छाती से लगाये रहती है। फिर गोबर रूपा को गोद में उठाकर प्यार करता है। सोना को थपथपाता है। होरी मुँह फेरे लेटा है।]

गोबर : अम्माँ, दादा को क्या हुआ ?

धनिया : कुछ नहीं बेटा, ज़रा सिर में दर्द है। चलो कपड़े उतारो। कहाँ थे तुम, इतने दिन राह देखते-देखते आँखें फूट गईं।

गोबर : *(शरमा कर)* कहीं दूर नहीं गया था, अम्माँ। यहीं लखनऊ में तो था।

धनिया : और इतने नियरे रहकर भी कभी एक चिट्ठी न लिखी।

[इसी बीच में सोना रूपा सारा सामान खोलकर फैलाती हैं। धनिया भी उधर बढ़ती है। बालक झुनिया की गोद से लपकना चाहता है पर वह उतरने नहीं देती।]

सोना : भइया तुम्हारे लिए एक कँघी लाये, भाभी।

झुनिया : *(उपेक्षा से)* मुझे ऐना-कँघी न चाहिए। अपने पास रखे रह।

रूपा : *(टोपी निकालकर)* ओहो, यह तो चुन्नु की टोपी है।

[बच्चे को पहनाती है, झुनिया उतार फेंकती है और अन्दर जाती है। गोबर मुस्कराकर वहीं बैठकर बक्स खोलता है।]

गोबर : ले सोना तेरी चप्पल। रूपा तू गुड़िया ले।

सोना : अहा-हा मेरी चप्पल।

रूपा : ऊँ-ऊँ मैं भी चप्पल लूँगी। मेरे लिए चप्पल क्यों नहीं लाए ?

सोना : तू क्या करेगी चप्पल लेकर, अपनी गुड़िया से खेल। हम तो तेरी गुड़िया देखकर नहीं रोते, तू मेरा चप्पल देखकर क्यों रोती है ?

धनिया : अच्छा-अच्छा, लड़ो मत। सब उठाकर अन्दर ले चलो।

[**गोबर साड़ियाँ निकालता है।**]

सोना : किनारदार साड़ी।

रूपा : जैसी पटेश्वरी लाला के घर पहनते हैं।

सोना : मगर है बड़ी हल्की। कै दिन चलेगी !

गोबर : यह रही दादा की धोती और यह रहा दुपट्टा।

धनिया : *(प्रसन्न होकर)* यह तुमने अच्छा किया बेटा। इनका दुपट्टा बिल्कुल तार-तार हो गया था। अच्छा-अच्छा मुँह-हाथ धो। फिर बाँट लेना। चल सोना, रूपा। उठाओ सब कुछ। मैं दुलारी की दुकान तक चली जाती हूँ।

[सब अन्दर जाते हैं। होरी भी गोबर का सहारा लेकर उठता है। दोनों धीरे-धीरे अन्दर जाते हैं। दो क्षण बाद घर के अन्दर से गोबर और झुनिया आते हैं।]

गोबर : क्या कहा दोनों बैल खोलकर ले गए ? इतनी बड़ी

जबरदस्ती। और दादा कुछ बोले नहीं ?

झुनिया : दादा अकेले किस-किस से लड़ते। फिर वे भलमनसी में आ गए। गाँववाले तो नहीं ले जाने देते थे।

गोबर : तो आजकल खेती-बारी कैसे हो रही है ?

झुनिया : खेती-बारी सब टूट गई। थोड़ी-सी पण्डित महाराज के साँझे में है। ऊख बोई ही नहीं गई।

गोबर : *(तेज़ी-से बढ़ता हुआ)* तो फिर मैं पहले उन्हीं से जाकर समझता हूँ। उनकी यह मजाल कि मेरे द्वार से बैल खोल ले जाएं। यह डाका है, खुला हुआ डाका।

झुनिया : *(उसे खींचती है)* तो चले जाना, अभी ऐसी क्या जल्दी है। कुछ आराम कर लो, कुछ खा-पी लो। सारा दिन तो पड़ा है। यहाँ बड़ी-बड़ी पंचायत हुई। पंचायत ने अस्सी रुपए डाँड़ लगाए।

गोबर : *(चकित)* अस्सी रुपए डाँड़ !

झुनिया : और तीन मन अनाज ऊपर से। उसी से तो तबाही आ गई।

गोबर : मेरा गधापन था कि घर से भागा, नहीं देखता कैसे कोई एक धेला डाँड़ लेता है। यही जी चाहता है कि लाठी उठाऊँ और पटेसरी, दातादीन, झिंगुरी सब सालों को पीटकर गिरा दूँ और उनके पेट से रुपए निकाल दूँ।

झुनिया : रुपए की गर्मी चढ़ी हुई है साइत। लाओ निकालो, देखूँ इतने दिन में क्या-क्या लाए हो।

गोबर : अभी क्या कमाया। हाँ, जब तुम चलोगी तो कमाऊँगा।

झुनिया : अम्माँ जाने देंगी तब तो...

गोबर : अम्माँ क्यों न जाने देंगी ? उनसे मतलब ?

झुनिया : वाह, उनकी राजी बिना कहीं न जाऊँगी। तुम तो छोड़कर चलते बने और मेरा कौन था यहाँ। वह अगर घर में न घुसने देतीं तो मैं कहाँ जाती। जब तक जीऊँगी उनका जस गाऊँगी। और तुम भी क्या परदेस ही करते रहोगे ?

गोबर : और नहीं यहाँ बैठकर क्या करूँगा। कमाओ और मरो, इसके सिवा यहाँ और क्या रखा है। थोड़ी-सी अकल हो और आदमी काम करने से न डरे तो वहाँ भूखा नहीं मर सकता। यहाँ तो अकल कुछ काम ही नहीं करती। हाँ, दादा क्यों मुझसे मुँह फुलाए हुए हैं !

झुनिया : अपने भाग बखानो कि मुँह फुलाकर छोड़ देते हैं। तुमने उपद्रव तो इतना बड़ा किया था कि उस क्रोध में पा जाते तो मुँह लाल कर देते।

गोबर : तो तुम्हें भी खूब गालियाँ देते होंगे ?

झुनिया : कभी नहीं, भूलकर भी नहीं। अम्माँ तो पहले बिगड़ी थीं पर दादा ने तो कभी कुछ नहीं कहा। जब बुलाते हैं बस प्यार से। हाँ, तुम्हारे ऊपर सैकड़ों बार बिगड़ चुके हैं।

[सहसा झिंगुरी सिंह का प्रवेश। झुनिया एकदम अन्दर जाती है।]

झिंगुरी सिंह : कब आए गोबर ? मजे में तो रहे। कहीं नौकर थे लखनऊ में ?

गोबर : *(हेकड़ी से)* लखनऊ गुलामी करने नहीं गया था। मैं व्यापार करता था।

झिंगुरी सिंह : *(अचरज से)* कितना रोज पैदा करते थे ?

गोबर : यही कोई ढाई-तीन रुपए मिल जाते थे। कभी चटक गयी तो चार भी मिल गए।

झिंगुरी सिंह : *(नम्र होकर)* इतनी कमाई कम नहीं बेटा, जो खरच करते बने। गाँव में तीन आने भी नहीं मिलते। भवनिया को भी कहीं कोई काम दिला दो। तुम्हारा तो मित्र है। तलब थोड़ी हो, कुछ गम नहीं। हाँ, चार पैसे की ऊपर की गुंजाइश हो।

गोबर : यह ऊपरी कमाई की चाट आदमी को खराब कर देती है ठाकुर। लेकिन हम लोगों की आदत कुछ ऐसी बिगड़ गई है कि जब तक बेईमानी न करें पेट ही नहीं भरता। पर संसार में इलम की कदर नहीं है, ईमान की कदर है।

[सहसा दातादीन का प्रवेश। झिंगुरी सिंह अभिमान से गोबर को देखते हुए जाते हैं।]

दातादीन : मजे में तो रहे गोबर ? सुना वहाँ कोई अच्छी जगह पा गए हो ? मातादीन को भी किसी हीले से लगा दो न। सच कहता हूँ गोबर, तेरी बहुत याद आती थी। अब तो रहोगे कुछ दिन ?

गोबर : हाँ, अभी तो रहूँगा कुछ दिन। उन पंचों पर दावा करना है जिन्होंने डाँड़ के बहाने मेरे डेढ़ सौ रुपए हजम किए हैं। देखूं कौन मेरा हुक्का-पानी बन्द करता है

और कौन बिरादरी मुझे जात-बाहर करती है !

[कहता-कहता तेज़ी-से अन्दर जाता है। दातादीन ठगा-सा उसे देखता है फिर सिर हिलाता हुआ जाता है। धनिया सामान लिए आती है। अन्दर जाती है। फिर रंगमंच पर समयसूचक प्रकाश का कम होना और तेज़ होना। गोबर सजधज कर बाहर जाने को आता है। पीछे-पीछे होरी है।]

गोबर : दादा, जब तक अपनी जोड़ी लाकर अपने द्वार पर न बाँध दूँगा तब तक मुझे चैन नहीं।

होरी : *(कातर स्वर)* रार मत बढ़ाओ बेटा। भोला गोई ले गए, भगवान उनका भला करें, लेकिन उनके रुपए तो देने ही थे।

गोबर : *(उत्तेजित स्वर)* दादा, तुम बीच में न बोलो। उनकी गाय पचास की थी। हमारी गोई डेढ़ सौ में आयी थी। तीन साल हमने जोती फिर भी सौ की थी ही। वह अपने रुपए के लिए दावा करते, डिग्री कराते, या जो चाहते करते। हमारे द्वार से जोड़ी क्यों खोल ले गए। मेरे सामने खोल ले जाते तो देखता। तीनों को यहीं ज़मीन पर सुला देता। और पंचों से तो बात तक न करता। देखता, कौन मुझे बिरादरी से अलग करता है लेकिन तुम बैठे ताकते रहे !

धनिया : बेटा, तुम भी तो अँधेर करते हो, हुक्का-पानी बन्द हो जाता तो गाँव में निबाह होता ? जवान लड़की बैठी, उसका भी कहीं ठिकाना लगाना है कि नहीं। मरने-जीने में आदमी बिरादरी...

गोबर : *(बात काटकर)* हुक्का-पानी सब तो था, बिरादरी में आदर भी था, फिर मेरा ब्याह क्यों नहीं हुआ ? बोलो। इसीलिए कि घर में रोटी न थी। रुपए हों तो न हुक्का-पानी का काम है, न जात-बिरादरी का। दुनिया पैसे की है, हुक्का-पानी कोई नहीं पूछता।

[**सहसा बच्चा रोता है, धनिया अन्दर जाती है। गोबर आगे बढ़ता है। होरी शून्य में ताकता हुआ सहसा जागता है। दो कदम बढ़ता है।**]

होरी : मैं भी चला चलूँ ?

गोबर : मैं लड़ाई करने नहीं जा रहा हूँ, दादा डरो मत। मेरी ओर तो कानून है। मैं क्यों लड़ाई करने लगा।

होरी : मैं भी चलूँ तो कोई हरज है ?

गोबर : हाँ, बड़ा हरज है। तुम बनी बात बिगाड़ दोगे।

[**कहकर वह तेज़ी-से जाता है। धनिया तेज़ी-से आती है।**]

धनिया : क्या गोबर चला गया ? अकेले ! भोला क्या सहज में गोई देगा। तीनों उस पर टूट पड़ेंगे। भगवान ही कुशल करे। अब किससे कहूँ दौड़कर गोबर को पकड़ लो। तुमसे तो मैं हार गई !

[**होरी उसे देखता है। फिर एकाएक डण्डा उठाकर भागता है। मंच पर सहसा अंधकार होने लगता है। धनिया अन्दर जाती है। पुनः प्रकाश होने पर बैलों की घण्टियाँ बजती हैं। गोबर अकड़ता हुआ मंच पर आता है। पीछे-पीछे एक व्यक्ति सिर पर हाँडी रखे है। गाँव के युवक भी हैं।**]

गोबर : *(गर्व से)* हाँडी अन्दर रख दो और गोई उधर बाँध दो।

(युवक से) आज होली है। मेरे द्वार पर भंग घुटेगी।

युवक : सच !

गोबर : सेर भर बादाम लाया हूँ। केसर अलग, पीते ही चोला तर हो जाएगा। आँखें खुल जाएँगी और खमीश तमाकू भी है। *(चुपके-से)* पर इस बार नकल करनी है।

[सब होली का गीत गाते हैं। उछल-कूद करते हैं। फिर नकल उतारते हैं। यह करते-करते मंच पर अंधकार छा जाता है। दो क्षण बाद धीरे-धीरे प्रकाश उभरता है। पूर्ण प्रकाश होने पर दातादीन झल्लाए हुए आते हैं। सवेरा हो चुका है।]

दातादीन : *(क्रोध से)* होरी...होरी...क्या आज भी तुम काम करने न चलोगे ?

गोबर : *(नींद में आँखें मलता बाहर आता है)* अब यह तुम्हारी मजूरी न करेंगे। हमें अपनी ऊख भी तो बोनी है।

दातादीन : *(सुरती फाँकते हुए)* मजूरी कैसे न करेंगे, साल के बीच में काम नहीं छोड़ सकते। जेठ में छोड़ना हो छोड़ दें। उसके पहले नहीं छोड़ सकते।

गोबर : उन्होंने तुम्हारी गुलामी नहीं लिखी है। जब तक इच्छा थी काम किया। अब नहीं इच्छा है नहीं करेंगे। इसमें कोई जबर्दस्ती नहीं कर सकता।

दातादीन : तो होरी काम नहीं करेगा ?

गोबर : ना।

[होरी का प्रवेश।]

होरी : *(एकदम)* क्यों न करें। महाराज, तुम्हारी चाकरी से मैं कब इन्कार करता हूँ। लेकिन हमारी ऊख...

गोबर : *(एकदम)* कैसी चाकरी और किसकी चाकरी। यहाँ कोई किसी का चाकर नहीं। सभी बराबर हैं। अच्छी दिल्लगी है। किसी को सौ रुपए उधार दे दिए और सूद में उससे जिन्दगी भर काम लेते रहे। मूल ज्यों का त्यों। यह महाजनी नहीं खून चूसना है।

दातादीन : तो रुपए दे दो भैया। लड़ाई काहे की। मैं आने रुपए ब्याज लेता हूँ। तुम्हें गाँव-घर का समझ कर आध रुपए आने पर दिया था।

गोबर : हम तो एक रुपया सैकड़ा देंगे। एक कौड़ी बेसी नहीं। तुम्हें लेना हो तो लो, नहीं अदालत से लेना।

दातादीन : मालूम होता है रुपए की गर्मी हो गयी है।

गोबर : गर्मी उन्हें होती है जो एक के दस लेते हैं, हम तो मजूर हैं। हमारी गर्मी पसीने के रास्ते बह जाती है। मुझे खूब याद है तुमने बैल के तीस रुपए दिए थे। उसके सौ हुए और अब सौ के दो सौ हो गए। *(छाती पर हाथ रखकर)* नौ साल में तीस रुपए के दो सौ। एक रुपए के हिसाब से कितना होता है। *(जमीन पर ठीकरे से हिसाब लगाता है)* दस साल में छत्तीस रुपए होते हैं। असल मिलाकर छासठ। उसके सत्तर रुपए ले लो। इससे बेसी मैं एक कौड़ी न दूँगा।

दातादीन : *(होरी से)* सुनते हो होरी, गोबर का फैसला। इस तरह का व्यवहार हुआ तो कै दिन संसार चलेगा ! और तुम बैठे सुन रहे हो ! मगर यह समझ लो, मैं ब्राह्मण हूँ, मेरे रुपए हजम करके तुम चैन न पाओगे। मैंने

ये सत्तर रुपये भी छोड़े, अदालत भी न जाऊँगा, जाओ। *(जाता है, लौटता है)* अगर मैं ब्राह्मण हूँ तो पूरे दो सौ रुपए लेकर दिखा दूँगा और तुम द्वार पर आओगे और हाथ बाँधकर दोगे।

[झल्लाए हुए हैं। तभी होरी दौड़कर चरण पकड़ लेता है। दातादीन पैर झटककर जल्दी-से चला जाता है।]

गोबर : तुम्हीं लोगों ने इन सबका मिजाज़ बिगाड़ दिया है। तीस रुपए दिए और अब दो सौ लेगा और डाँड़ ऊपर से बताएगा, और मजूरी कराते-कराते मार डालेगा।

होरी : मार डाले पर नीति हाथ से न छोड़ना चाहिए बेटा, अपनी करनी अपने साथ है। हमने जिस ब्याज पर रुपए लिए वह तो देने ही पड़ेंगे। फिर ब्राह्मण ठहरे। इनका पैसा हमें पचेगा ?

गोबर : कौन कह रहा है कि ब्राह्मण का पैसा पचा लो। मैं तो यही कहता हूँ कि इतना सूद हम नहीं देंगे। बैंक वाले बारह आने सूद लेते हैं। तुम एक रुपया ले लो। और क्या किसी को लूट लोगे।

होरी : बेटा, जब तक मैं जीता हूँ मुझे अपने रास्ते चलने दो, जब मर जाऊँ तुम्हारी जो इच्छा हो वह करना।

गोबर : तो फिर तुम्हीं देना। मैं अपने पाँव में कुल्हाड़ी न मारूँगा। मेरा गधापन था कि तुम्हारे बीच में बोला। तुमने खाया है तुम भरो, मैं क्यों अपनी जान दूँ।

[तेज़ी-से अन्दर जाता है, पीछे-पीछे होरी भी। तभी बाहर से सोना, रूपा, लड़ती-झगड़ती आती हैं। रूपा सोना को पकड़कर ज़ोर-से काट लेती है। सोना चीख़ती

है और रूपा को ढकेलती है। वह गिरती है और चीख़कर उठती है। उस चीख़ को सुनकर गोबर क्रोध में भरा हुआ अन्दर से आता है और दोनों को पीटता है।]

गोबर : क्या शोर मचा रखा है। नाक में दम कर दिया। इतनी बड़ी हो गई, रत्ती भर तमीज़ नहीं।

[दोनों रोती हुई अन्दर भागती हैं। होरी घबराया-सा बाहर आता है।]

होरी : दोनों को मारकर भगा दिया ?

गोबर : *(तेज़ी-से)* तुम्हीं ने इन सबको बिगाड़ रखा है।

होरी : पर इस तरह मारने से और भी निर्लज्ज हो जाएँगी।

गोबर : दो जून खाना बन्द कर दो। आप ठीक हो जाएँ।

होरी : मैं उनका बाप हूँ। कसाई नहीं हूँ। अब पानी कौन चलाएगा ?

गोबर : पानी भी कोई चला लेगा। *(तेज़ी-से अन्दर जाता है और झुनिया को लेकर आता है। पीछे-पीछे धनिया और दोनों बेटियाँ हैं।)*

गोबर : पानी यह चलाएगी।

[दोनों बाहर जाते हैं।]

धनिया : देख...इसने आज जवान लड़की पर हाथ उठाया। रूपा को मार लेता तो कुछ न था...

[होरी कुछ नहीं कहता। वह तो जैसे खो गया। एक क्षण बाद वह बिना कुछ कहे चला जाता है। धनिया, रूपा, सोना भी उसी तरह पीछे-पीछे जाती हैं। मंच पर अंधकार उतरने लगता है। गहन होता है, फिर प्रकाश उभरकर फैल जाता है। गोबर नोखेराम से तेज़-तेज़ बातें करते वहाँ आता है।]

गोबर : *(उत्तेजित स्वर)* यह क्या बात है कारिन्दा साहब कि दादा ने हाल तक का लगान चुकता कर दिया और आप अभी-भी दो साल का बाकी निकाल रहे हैं ? यह कैसा गोलमाल है ?

नोखेराम : जब तक होरी है मैं तुमसे लेन-देन की कोई बातचीत नहीं करना चाहता।

गोबर : तो मैं घर में कुछ नहीं हूँ ?

नोखेराम : तुम अपने घर में सब-कुछ होगे। इस मामले में तुम कुछ नहीं हो।

गोबर : अच्छी बात है, आप बेदखली दायर कीजिए। मैं अदालत में तुमसे गंगाजली उठवाकर रुपए दूँगा; इसी गाँव से एक सौ सहादतें दिलाकर साबित कर दूँगा कि तुम रसीद नहीं देते।

नोखेराम : तुम सहादत दिलाओगे ?

गोबर : जरूर दिलवाऊँगा। सीधे-सादे किसान हैं, कुछ बोलते नहीं; तो तुमने समझ लिया कि सब काठ के उल्लू हैं, रायसाहब वहीं रहते हैं जहाँ मैं रहता हूँ। गाँव के सब लोग उन्हें हौवा समझते होंगे, मैं नहीं समझता। रत्ती-रत्ती हाल कहूँगा।

नोखेराम : रायसाहब से कहोगे ? *(मुख के भाव पलटते हैं।)*

गोबर : हाँ कहूँगा और देखूँगा तुम कैसे मुझसे दोबारा रुपए वसूल कर लेते हो।

नोखेराम : मैं दोबारा क्यों वसूल करूँगा। और तुम इतना गर्म क्यों हो रहे हो, इसमें गर्म होने की कौन-सी बात है ?

गोबर : बात क्यों नहीं है। दादा ने पाई-पाई लगान चुका दिया। तुम कहते हो दो साल की बाकी है।

नोखेराम : अगर होरी ने रुपए दिए हैं तो कहीं-न-कहीं तो टाँके गए होंगे। मैं कल कागज निकाल कर देखूँगा। मैं अभी कागज निकाल कर देखता हूँ। *(जाता है मुड़कर देखता है)* तुम निसाखातिर रहो। अगर रुपए आ गए हैं, तो कहीं नहीं जा सकते। मुझे भी कुछ-कुछ याद आ रहा है कि शायद होरी ने रुपए दिए थे।

[चला जाता है। होरी आवाज़ सुनकर बाहर आता है।]

होरी : नोखेराम चले गए ?

गोबर : जाते न तो क्या करते ? लेकिन मैं कहे देता हूँ, दादा, मैं कहाँ-कहाँ तुम्हारी रक्षा करता फिरूँगा। सत्तर रुपए दिए जाता हूँ। दातादीन ले, तो देकर भरपाई लिखा लेना। इसके ऊपर तुमने एक पैसा भी दिया तो फिर मुझसे एक पैसा भी न पाओगे। मैं परदेस में इसलिए नहीं पड़ा हूँ कि तुम अपने को लुटवाते रहो और मैं कमा-कमाकर भरता रहूँ। मैं कल चला जाऊँगा।

[धनिया आती है।]

धनिया : अभी क्यों जाते हो बेटा, दो-चार दिन और रहकर ऊख को बोनी करा लो और कुछ लेन-देन का हिसाब भी ठीक कर लो तो जाना।

गोबर : मेरा दो-तीन रुपए रोज का घाटा हो रहा है, यह भी समझती हो ? यहाँ मैं बहुत-बहुत चार आने की मजूरी

ही तो करता हूँ। और अबकी मैं झुनिया को भी लेता जाऊँगा। वहाँ मुझे खाने-पीने की बड़ी तकलीफ होती है।

धनिया : *(डरते-डरते)* जैसी तुम्हारी इच्छा। लेकिन वहाँ वह कैसे अकेले घर सँभालेगी, कैसे बच्चे की देख-भाल करेगी।

गोबर : अब बच्चे को देखूँ कि अपना सुभीता देखूँ। मुझसे चूल्हा नहीं फूँका जाता।

धनिया : ले जाने को मैं नहीं रोकती, लेकिन परदेस में बाल-बच्चों के साथ रहना, न कोई आगे न पीछे, सोचो कितना झँझट है।

गोबर : परदेस में भी संगी-साथी निकल जाते हैं। और यह तो स्वारथ का संसार है। जिसके साथ चार पैसे गम खाओ, वही अपना। खाली हाथ तो माँ-बाप भी नहीं पूछते।

धनिया : माँ-बाप को भी तुमने उन्हीं पैसे के यारों में समझ लिया।

गोबर : आँखों देख रहा हूँ।

धनिया : नहीं देख रहो हो। माँ-बाप का मन इतना निठुर नहीं होता। हाँ, लड़के अलबत्ता जहाँ चार पैसे कमाने लगे कि माँ-बाप से आँखें फेर लीं। माँ-बाप करज-कवाम लेते हैं किसके लिए ? लड़के-लड़कियों के लिए कि अपने भोग-विलास के लिए ?

गोबर : क्या जाने तुमने किसके लिए करज लिया ? मैंने तो एक पैसा भी नहीं जाना।

धनिया : बिना पाले ही इतने बड़े हो गए !

गोबर : पालने में तुम्हारा लगा क्या। जब तक बच्चा था दूध पिला दिया फिर लावारिस की तरह छोड़ दिया। जो सबने खाया वही मैंने खाया। मेरे लिए दूध नहीं आता था ! मक्खन नहीं बँधा था।

धनिया : *(चौंकती है)* गोबर !

गोबर : मैं झूठ कह रहा हूँ ? और अब तुम चाहती हो और दादा भी चाहते हैं कि मैं सारा करजा चुकाऊँ, लगान दूँ, लड़कियों का ब्याह करूँ। जैसे मेरी जिन्दगी तुम्हारा देना भरने के लिए है ! मेरे भी तो बाल-बच्चे हैं।

धनिया : *(दुखी स्वर)* यह मन्तर तुम्हें कौन दे रहा है बेटा। तुम तो ऐसे न थे। यह सब झुनिया की सीख है। मैं न जानती थी झुनिया नागिन बनकर हमीं को डसेगी।

गोबर : *(तिनककर)* अम्माँ मैं नादान नहीं हूँ कि झुनिया मुझे मन्तर पढ़ावेगी। तुम्हारी गिरस्ती का सारा बोझ मैं नहीं उठा सकता।

झुनिया : *(तेज़ी-से आकर)* अम्माँ, जुलाहे का गुस्सा दाढ़ी पर न उतारो। कोई बच्चा नहीं है कि उसे फोड़ लूँगी, अपना भला-बुरा समझते हैं। आदमी इसलिए नहीं जनम लेता कि सारी उम्र तपस्या करता रहे और एक दिन खाली हाथ मर जाए।

धनिया : *(दाँत पीसकर)* अच्छा झुनिया, बहुत ज्ञान न बघार। अब तू भी अपना भला-बुरा सोचने जोग हो गई है। जब यहाँ आकर मेरे पैरों पर सिर रखे रो रही थी

उस घड़ी हम भी अपना भला-बुरा सोचने लगते तो तेरा आज कहीं पता न होता।

झुनिया : ओ हो पता न होता ! क्या किया मेरे साथ। सारे गाँव वाले जानते हैं तुम्हें।

धनिया : गाँववाले क्या जानते हैं सुनूँ तो ! बड़ी आयी गाँव वाली। दो दिन में जबान निकालने लगी। यहाँ सौक-सिंगार करने को नहीं मिलता, घर का काम भी करना ही पड़ता है। वहाँ रुपए-पैसे हाथ में आएँगे, मजे से चिकना खाएगी। चिकना पहनेगी।

झुनिया : खाऊँगी, पहनूँगी। अपने मर्द की ही कमाई तो। किसी गैर की तो नहीं। सब खाने-पहनने को तो कमाते हैं। और फिर मैं कुछ भी करूँ तुम्हें क्या ?

धनिया : मुझे क्या ? आज तू ऐसे बोलती है। यहाँ सरन न मिली होती तो आज कहीं भीख माँगती होती।

झुनिया : अब जैसे रानी बनी बैठी हूँ। दिन-भर काया गलाती हूँ।

[गाँव के स्त्री-पुरुष आ-आकर खड़े होते हैं। कुछ समझाते भी हैं, पर दोनों तेज़ हैं।]

धनिया : काया तू ही गलाती है और हम तो जैसे टाँग फैलाकर सोते हैं। सुनो तो इस चुड़ैल की बातें।

झुनिया : ये क्या सुनेंगे मेरी बातें। ये क्या नहीं जानते कि तुमने हीरा और सोभा काका के साथ क्या किया ! तुमने उन्हें कहीं का न रखा !

गोबर : यह तो मुझे भी बरबाद करने पर तुली है।...अम्माँ।

तुम नाहक उसे कोस रही हो, तुम्हारी किसी से...

धनिया : मैं नाहक कोस रही हूँ ? उसे कोई नहीं देखता। इसके पीछे डाँड़ देना पड़ा, बिरादरी में बदनामी हुई, खेती टूट गई, सारी दुर्गत हो गई। और आज यह चुड़ैल जिस पत्तल में खाती है उसी में छेद कर रही है। पैसे देखे तो आँख हो गयी !

गोबर : अम्माँ, तुम्हारी आज तक किसी से न पटी, तो झुनिया से कैसे पट सकती है। चल झुनिया चल, मैं अभी सहर जाता हूँ। *(दोनों अन्दर जाते हैं)*

धनिया : जाओ, सब जाओ लेकिन कहे देती हूँ मैं भी कि...

होरी : *(एकदम)* मैं तेरे पैरों पड़ता हूँ, धनिया, चुप रह। मेरे मुँह में कालिख मत लगा...

धनिया : *(तेज़)* तुम भी मोटी ढाल पकड़ने चले। मैं ही दोषी हूँ। वह तो जैसे फूल बरसा रहा है।

होरी : जो छोटों के मुँह लगे, वह छोटा।

धनिया : झुनिया छोटी है ?

होरी : अच्छा, वह छोटी नहीं। बड़ी सही। जो आदमी नहीं रहना चाहता, क्या उसे बाँधकर रखेगी ? माँ-बाप का धरम है लड़के को पाल-पोसकर बड़ा कर देना। वह हम कर चुके।

धनिया : और लड़कों का कुछ धरम नहीं है ?

[गोबर बिस्तर लिए आता है, झुनिया चुन्दरी पहने है। चुन्नू ने टोप और फ्राक पहन रखा है, सोना, रूपा

पागल-सी पीछे-पीछे हैं। होरी गोबर के पास आकर करुण कण्ठ से कहता है।]

होरी : बेटा, तुमसे कुछ कहने को मुँह तो नहीं है लेकिन कलेजा नहीं मानता। क्या जरा जाकर अपनी अभागिनी माता के पाँव छू लोगे तो कुछ बुरा होगा। जिस माता की कोख से जनम लिया और जिसका रक्त पीकर पले हो उसके साथ इतना भी नहीं कर सकते।

गोबर : *(मुँह फेरकर)* मैं उसे अपनी माता नहीं समझता।

होरी : *(रूँधा गला)* जैसी तुम्हारी इच्छा। जहाँ रहो सुखी रहो।

[झुनिया सास के पास आती है, अँचल से चरण छूती है पर धनिया नहीं बोलती। आगे-आगे बालक को लिए गोबर, पीछे-पीछे बिस्तर लिए झुनिया। मंच पर रूपा, सोना है जो पीछे-पीछे जाती हैं। रोती हैं, ठिठकती हैं। होरी है जो रोता हुआ एकटक देखता है। धनिया है जो कहीं न देखकर रोए जा रही है। तभी धीरे-धीरे मंच पर अंधकार फैलने लगता है, और उसी के साथ नेपथ्य से उद्घोषक का स्वर उठता है।]

उद्घोषक : *बेचारा होरी ! आखिर बेटा भी चला गया। रोने से तो समस्या का हल होता नहीं यह वह अच्छी तरह जानता है। क्योंकि उसे दो बेटियों का विवाह करना है। और घाव पर नमक छिड़कने की तरह मँगरू साह मुकद्दमा जीत गया है, होरी पर डेढ़ सौ रुपए की डिगरी हो गई। इसलिए एक दिन मँगरू साह अमीन को लेकर आया और खेत काटकर ले गया। लेकिन जहाँ अंधकार है, वहाँ बीच-बीच में प्रकाश की रेखाएँ भी उभर आती हैं। ऐसे समय में उनकी समधन आकर उनकी सहायता करती*

है, और उन्हें रुपए देती है। एक दिन वो रुपए लौटाने तो होंगे। पर अभी तो उनके सहारे एक बेटी की शादी हो जाती है। दूसरी बेटी के लिए भी प्रस्ताव आता है। वह अधेड़ है पर पैसे वाला है। स्वास्थ्य भी अच्छा है। वे चाहते तो नहीं पर विवश होकर छोटी बेटी की शादी उससे कर देते हैं, तभी रूठा हुआ बेटा भी घर लौट आता है। कुछ क्षण के लिए घर में ख़ुशी की लहर दौड़ जाती है। पर उससे ज़मीन जाने का डर तो दूर नहीं होता। कर्ज़ भी उतारना हैं। बिना किसी को बताए उसने छोटी बेटी के वर रामसेवक से रुपए लिए थे। इस बात की उसे बड़ी पीड़ा है। और हाँ, एक गाय भी तो लेनी है। ये परेशानियाँ उसे आराम से सोने नहीं देती। सेहत गिरती चली जाती है।

[**इसी समय धीरे-धीरे मंच पर प्रकाश उभरता है और होरी अपने घर के बाहर खाट पर बैठा किसी सोच में डूबा है। तभी धनिया अन्दर से आती है।**]

धनिया : क्या सोच रहे हो, क्या हालत बना ली है तुमने अपनी। मेरी तो जान निकली जाती है।

होरी : तू क्यों चिन्ता करती है बावली। देख कितने काम थे, पूरे हो गए न। पर अब सोचता हूँ कहीं कुछ मिल जाए तो घर में एक गाय और आ जाए। करज भी तो उतारना है।

धनिया : जानती हूँ, जानती हूँ। तुमने रामसेवक से रुपए लिए हैं। यही बात तुम्हें खाए जा रही है।

[**तभी सोभा का प्रवेश।**]

सोभा : दादा, दादा। सुना एक ठेकेदार ने सड़क के लिए गाँव के असर में कंकड़ की खुदाई शुरू की है।

होरी : सच।

सोभा : हाँ, दादा।

होरी : तब तो ठीक है। क्या देते हैं ?

सोभा : आठ आने रोज।

होरी : फिर क्या है। यह काम दो महीने टिक जाए तो गाय भर को रुपए मिल जाएँगे। चल सोभा मैं अभी देखता हूँ।

धनिया : अरे इतनी जल्दी क्या है !

होरी : जल्दी ? गाय लेनी है। रामसेवक के रुपए अदा करने हैं। जमीन बचानी है।

[तेज़ी-से चला जाता है।]

उद्घोषक : *टूटा हुआ शरीर और टूट जाता है। दोपहर हो, लू चलती हो, पर उसे तो रोज़ काम करना है। गाय जो लानी है, ज़मीन जो बचानी है, कर्ज़ जो उतारना है। वह आराम कैसे कर सकता है। इसलिए बेचारा किसान मज़दूर बन जाता है। और फिर वही होता है जिसका डर था। काम करते-करते एक दिन वह गिर पड़ता है। उठता है पानी पीता है।*

[तभी धीरे-धीरे प्रकाश उभरने लगता है, उद्घोषक का स्वर मौन हो जाता है। मंच पर होरी लेटा हुआ है। दोपहर की घण्टी बजती है। कई मज़दूर उधर आते हैं और होरी को देखते ही उसके पास पहुँचते हैं।]

मज़दूर : कैसा जी है होरी भइया ?

होरी : कुछ नहीं, अच्छा हूँ।

मज़दूर : खाली पेट पानी पी लिया शायद। इस लू में काम करते हो फिर कुछ खाते नहीं, पानी नुकसान कर जाएगा।

होरी : नुकसान। अब जी के करना भी क्या है। बस गाय ...तुम जाओ भइया...

[मज़दूर चला जाता है। दो क्षण सन्नाटा गहराता है फिर एकाएक होरी बड़बड़ाने लगता है।]

होरी : माँ...गोबर...धनिया...धनिया...गाय आ गई, मंगल को दूध पिला दे...माँ...माँ...मैं तेरी गोद में सोऊँगा... माँ..., देख पटेसरी ने मेरी गुल्ली छीन ली, माँ...

[कुछ क्षण चुप हो जाता है। फिर बड़बड़ाता है। मजूर काम पर जाते हैं। एक मजूर होरी की ओर आता है।]

मज़दूर : दोपहर ढल गई होरी। चलो झौवा उठाओ...होरी... *(पास जाता है, देखता है)* कैसा जी है ? *(सिर पर हाथ रखता है)* अरे इसकी तो देह जल रही है। हाथ-पाँव ठण्डे हो रहे हैं। लू लग गयी है। *(एकदम बाहर जाता है)* अरे कोई है। होरी के घर जाना। लू लग गई है इन्हें।

[होरी पहले की तरह बड़बड़ाता है।]

होरी : गोबर, गोबर रुपए हो गए। गाय आ गई, मंगल को दूध पिला दो...धनिया तूने लाल चुन्दरी पहनी है। दुल्हन बनी है। धनिया...गाय कामधेनु है, देवी।...

[तभी सहसा धनिया दौड़ी आती है। होरी को छूती है और पागल-सी देखती है। काँपती है।]

धनिया : कैसा जी है तुम्हारा ? मैं तो पहले ही कह रही थी

है और पागल-सी देखती है। काँपती है।]

धनिया : कैसा जी है तुम्हारा ? मैं तो पहले ही कह रही थी पर तुमने सुना भी हो...

होरी : तुम आ गए गोबर, मैंने मंगल के लिए गाय ले ली। वह खड़ी है, देखो कैसी मस्तानी है, कैसे झूम रही है। आज कैसा सुभ दिन है। मेरे द्वार पर कामधेनु बँधी है।

धनिया : *(रोते हुए)* मेरी ओर देखो, मैं हूँ। क्या मुझे नहीं पहचानते। देखो जी...

[होरी की चेतना लौटती है। धनिया को दीन आँखों से देखता है।]

होरी : *(क्षीण स्वर)* कौन ?

धनिया : मैं हूँ, धनिया।

होरी : धनिया। *(क्षीण स्वर)* मेरा कहा-सुना माफ करना। अब जाता हूँ। गाय की लालसा मन में ही रह गई। अब तो यहाँ के रुपए क्रिया-करम में जाएँगे। *(धनिया रोती है)* रो मत धनिया। अब कब तक जिलाएगी ? सब दुर्दसा तो हो गई। अब जाने दे।

धनिया : कैसे जाने दूँ। मैं भी तो चलूँगी। गाँठ बाँधकर लाए थे। अकेले कैसे जाओगे।

[वह आँखें बन्द करता है। तभी हीरा व गाँव के दूसरे लोग आते हैं उसे खाट पर लिटाते हैं। सारा गाँव आ जाता है।]

दातादीन : होरी महतो, होरी महतो...अरे इनकी तो जबान बन्द हो गयी। आम का पना बनाया, धनिया ?

धनिया : *(रोकर)* वह रहा पना। पैसे होते तो डॉक्टर को बुलाती *(होरी से)* लो यह आम का पना पी लो, *(पिलाती है पर नहीं पिला पाती।)*

झुनिया : *(आकर)* गेहूँ की भूसी यह रही अम्माँ। देह में मलो तो।

धनिया : ला...

[धनिया मलती है।]

सोभा : *(आकर)* दादा...दादा...

पटेश्वरी : *(देखकर)* क्या रखा है धनिया अब। महतो चले।

हीरा : *(रोते-रोते)* भाभी, दिल कड़ा करो, गोदान करा दो, दादा चले।

दातादीन : हाँ, गोदान करा दो। अन्त आ गया। महतो जा रहे हैं। यही समय है धनिया, गोदान करा दो। महतो अब नहीं बचेंगे।

[धनिया अब तक देह मल रही थी। तड़पकर उठती है। होरी को देखती है, फिर टेंट से बीस आने पैसे निकालती है। पति के ठण्डे हाथ पर रखती है और दातादीन से कहती है।]

धनिया : महाराज, घर में गाय है न बछिया है न पैसा। आज जो सुतली बेची थी उसके यही बीस आने पैसे हैं, यही इनका गोदान है।

[कहती-कहती वह पछाड़ खाकर गिर पड़ती है। सब लोग सिर झुका लेते हैं और सुबक उठते हैं। यहीं परदा गिर जाता है।]

□□□